लीला सुधा सिन्धु
पद्य रामायण
: रचयिता :
श्रीमद् स्वामी रामहर्षणदास जी महाराज

॥ श्री सीतारामाभ्याँ नमः ॥

# लीला सुधा सिन्धु

## ( पद्य रामायण )

* रचयिता *

श्रीमद् स्वामी रामहर्षण दासजी महाराज

वसंत पंचमी

(विक्रम सं २०६३)

**लीला सुधा सिन्धु** (पद्य रामायण)


रचयिता :

**श्रीमद् स्वामी रामहर्षण दासजी महाराज**



प्रकाशक :

प्रकाशन विभाग

श्री रामहर्षण कुंज,

परिक्रमा मार्ग,

अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

दूरभाष : (०५२७८) २३२३१७





तृतीय आवृत्ति : ११००

वसंत पंचमी

(विक्रम सं २०६३)

मूल्य : रु. १५० मात्र

**टाइप सेटिंग एवं डिज़ाइन :**

**डी टी पी सेन्टर, सरस्वती सद्नम कॉम्पलेक्स,**

**धरमपेठ, नागपुर - ४४० ०१०**

**दूरभाष : (०७१२) २५६०९८९**

श्रीमद् स्वामी रामहर्षण दास जी महाराज

अलिन आस करि पूर कृपानिधि, तिनहिं दिये सुख सहज अथोर॥
आनँद सने मेह मधु वर्षत, कुहकति कोकिल नाचत मोर।
हर्षण सरयू उमड़ि सुखहिं सनि, वर्षि सुमन सुर जय जय शोर॥

(९७०)

वारि जाऊँ दशरथ नन्दा के झुलनि पर।
रसिक शिरोमणि रस के भोगी, उड़गन में जनु चन्दा॥
संग लिये मोहिं झुलत हिंडोरे, फाँसि भुजन के फंदा।
चितवनि चित्त चोरावत मेरो, मोहत मुसुकनि मन्दा॥
प्रेम पगे पुनि मेलि हृदय महँ, वितरत अतिहिं अनन्दा।
पैग भरनि पुलकनि झुकि झमकनि, सोहति झुलनि झुलन्दा॥
मधुर मधुर मुरली मुख टेरनि, वशी करनि सुख कन्दा।
मुख सरोज अलि मधुप ह्वै हर्षण, पियै मधुर मकरन्दा॥

(९७१)

पिय प्यारी झुलनि सखि मन में बसी।
दुइ के एक ह्वै लसत हिंडोरे, इक के दोय दिखावैं असी॥
मन चित बुद्धि आत्म ह्वै एकी, प्रेम पगे भुज फाँस फसी।
छनहु विलग नहिं चहहि मनहु ते, रूप रसिक रस रास रसी॥
चित्त चोरावनि चंचल चितवनि, इक इक की हिय हरणि हँसी।
सेवति प्रकृति भले विधि दोउ कहँ, पावस ऋतु तिय रूप जसी॥
वर्षत मेह मोर बन नृत्यत, हरित भूमि सरि लहर लसी।
हर्षण नृत्य गान करि अलियाँ, वाद्य बजत सुर सुमन दसी॥

(९७२)

झूलत झमकि किशोर किशोरी।
कनक हिंडोरे बैठ मुदित मन, सखियन के चित चोरी॥
पैग भरत पिय उमगत उर में, झूलन को झक झोरी।
सिय को सभय देखि अलि रोकहिं, तदपि करत बरजोरी॥
सखि संकेत उतरि तब प्यारी, अन्य कुंज गई भोरी।
प्राण वल्लभहिं पाय न रघुवर, गये विरह रस बोरी॥
खोजि विनय करि मान छुड़ायो, अलियन बहुत निहोरी।
हर्षण युगल लगे पुनि झूलन, प्रीति पगे सुख सोरी॥

(९७३)

धीरे धीरे झुलनियाँ झूल अब मोरे प्राणों के प्राण।
धीरे झूलत अति सुख उपजत, भय नहिं होवति भूल॥
पुष्प हार मणि माल न टूटत, हियहु रहै बिन हूल।
अरुझि हिंडोर न फाटत सारी, वायुहु भरै न धूल॥
उड़ि उड़ि बसन न होहिं पृथक तन, जो जग लज्जा मूल।
झूलन खसकि भूमि नहिं आवैं, जो रस भंजन शूल॥
आनँद लहर बढ़ै अधिकाधिक, जावहिं सखि सब फूल।
हर्षण प्रिया बचन सुनि प्रीतम, झूल हिंडोर अतूल॥

(९७४)

झूलत नृप मणि मुकुट दुलारे, संग सिया सुकुमारी पिअरिया।
आनँद मूर्ति पिया अरु प्यारी, आनँद मूर्ति सखी सुकुमरिया॥

विपिन प्रमोद सुखद सरयू तट, आनँद मयी कदम की डरिया।
आनँदमयी मेह की वर्षनि, मोरी मोर नटनि हिय हरिया॥
पपिहा पिउ कहि प्रीति जगावत, कोकिल कुहुकनि आनँद करिया।
आनँद मय अलि नृत्य नवल नव, आनँद मयी गीत रस झरिया॥
वीणा वेणु बजावनि मधुरी, आनँद बोल मृदंग सुघरिया।
हर्षण आनँद सनि सुर सिगरे, वर्षि सुमन जय जयति उचरिया॥

(९७५)

पिय प्यारी रसे रस आज झमकि झूकि झूलि रहे।
निरखि निरखि एक एकन दोउ, सुखहिं सने भल भ्राज॥
प्यारी कहति झुलन सुख पियते, पियजू प्यारिहिं गाज।
सिय जू कहैं सलोने सैया, रस वर्धन रस राज॥
सैंया कहत सिया रस दायिनि, सखियन सहित समाज।
सखी कहहिं जय जानकि वल्लभ, राम बल्लभा भ्राज॥
झाँकी युगल रसीली रस भरि, सुख सरसन के काज।
हर्षण हमहिं दिखायो हिय हरि, धनि धनि मधुर अवाज॥

(९७६)

झुलत झूला पिय प्यारी हमारे।
तटनि सरोजा वन प्रमोद में, कुंज हिंडोर मझारी॥
छाये राम श्याम घन सुन्दर, दामिनि जनक दुलारी।
रस की झरी जोर इत झरि रहि, आनँद उदधि अपारी॥
रिमझिम रिमझिम वर्षत बदरा, उत नभ ते वर वारी।

नृत्य गीत वर वाद्य मधुरिमा, इत छाई सुख सारी।।
उमड़नि घुमड़नि गरजनि तरजनि, उत ते मधुरि सुना री।
प्रकृति प्रभा ऋतु पावस सेवित, नृपति कुमार कुमारी।।
रामा रमन राम की रमकनि, हर्षण को हिय हारी।

(९७७)

झूला परा अशोक की गछिया, झूलत नृपति कुँआरी कुँअरबा।
उनइ उनइ पुनि उमड़ि घुमड़ि के, रिमझिम वर्षै कारे बदरबा।।
दामिनि दमकि दमकि चक चौंधति, लखि लखि नृत्यत मोरी औ मोरबा।
तरल तरंग त्वरात तरंगिनि, बहति उछरि करि कल कल शोरवा।।
अलिगण झमकि झुलावहि झुकि झुकि, हर्षहिं हेरि के प्यारी पियरवा।
नृत्यहिं छुम छुम छमकि छमकि के, वीणा वेणु झाँझ झनकरवा।।
आनँद अंबुधि उमड़ि चतुर्दिक, कीन्हेउ लय अग जगहि अमरवा।
विबुध प्रसून प्रवर्षहिं प्रमुदित, हर्ष उठ्यो हो हर्ष हियरवा।।

(९७८)

श्रावण की बहार बढ़ी श्रावण की।
झूले में रहे झूल छबी छावन की।।
देखो दशरथ कुमार, लिये सिया सुखसार, मोदै मन में अपार
भले भावन की।।
चितवनि चित को चोराय, मधुरे मुख मुसकाय, वर्षि सुधा सरसाय
पगे पावन की।।

क्रीट मुकुट सिरहि सोह, पीत हरे वसन जोह, हर्ष जगत जो न मोह
लखे लावन की॥
झाँकी झाकैं पियार, अली गई बलिहार, जीवन जीवैं हमार
गीत गावन की॥

(९७९)

झुकि झूलैं झुलनियाँ प्यारी री।
प्रियतम रस में रसी रसिकनी, पिय-गल बहियाँ डारी री॥
आनँद कन्दिनि आनँद पागी, रसिया मुख रिझवारी री।
रामहु रमत रमावत रामा, वर्षत रस दिग चारी री॥
शत शशि विजित वरानन सिय को, निरखि जात बलिहारी री।
अलिगण देखि देखि सब वारैं, युगल प्रीति बड़ भारी री॥
नृत्य गान वर वाद्य ते सेवहिं, कला कुशल अविकारी री।
हर्षण झरी प्रसून की लागी, देव करत जय कारी री॥

(९८०)

अमवा की डारी झूलैं श्यामा सँवरिया, मोहैं हो मनमा हमार।
कुहु कुहु कुहुकति कोयल कारी, पपिहा पी पी शब्द उचारी।
सुख उपजत भारी हर्षैं प्यारो पियरिया॥
रिमझिम रिमझिम कारे कारे, वर्षैं बदरा घुमड़ि उदारे,
नचि नचि सुख पारी केकी करतो कहरिया॥
उछरति सरयू युगल किनारे, प्रकृति प्रभा मनमोहनि डारे,
वर्षा ऋतु पारी सोहे धरा हरियरिया॥

अलिगण सोहहिं चारहु ओरी, रिझवहिं सबहिं किशोर किशोरी,
नृत्य कला कारी गीत वाद्य झनकरिया॥
सीताराम हृदय के हारी, मूरति सुख सुषमा श्रृंगारी,
चित कर्षण कारी हर्षण आनँद अपरिया॥

(९८१)

झूलैं झुलनमा आज री मोरे मन के मोहनमा।
आन बान क्या शान सुहावै, चमकति दमकति छबि छहरावै।
मदन मोह शशि लाज री।
है अतिशय अभिरामिनि आभा, हिय की हरणि सुखहिं सुखलाभा।
जानहिं अलिन समाज री।
चितवनि मुसकनि चित को चोरी, बने परस्पर चन्द्र चकोरी।
सिय-साजन रस राज री।
सखिगण झुकि झुकि झमकि झुलावैं, प्रमुदति ह्वै कोउ पान खवावै।
कोउ लिये सेवन साज री।
नृत्य कला नैपुण्य नवेली, नाचहिं गावहिं प्रेम पुतेली।
वर वाद्यहु बहु बाज री।
परम प्रसन्न पिया अरु प्यारी, बैठि हिंडौर हर्ष हिये भारी।
रस वर्धन के काज री।
मेघ मलारहिं गावन लागे, वेणु बजावत उर अनुरागे।
गंधर्वन सिर ताज री।
अमर अकाश निशान बजावत, जय जय कहत पुष्प वर्षावत।
हर्षण हर्षित भ्राज री।

(९८२)

दोउ झुलत हिंडोरे प्यारी पिया।
नख शिख वसन विभूषण भूषित, मधु ते मधुरे राम सिया।।
कनक मणिन को बन्यो झूलना, लखतहिं चित को चोर लिया।
नृत्य गीत वर वाद्य ते रिझवहिं, अलिगन मंजुल मनहिं दिया।।
मुसुकि मधुर दोउ मन को मोहत, सखियन ओरी सैन किया।
सेवति प्रकृति लली अरु लालहिं, हरित हरित महि हरित हिया।।
नन्हीं बूंदन कारी बदरिया, वर्षत मोरहु नाँच जिया।
हर्षण कुहकति कोयल कारी, रटत पपीहा पिया पिया।।

(९८३)

झूलत कृपामयि औ कृपाल।
रस वर्षाय सखिन सुख देवत, धनि धनि लाली लाल।।
दै भुज अंश परस्पर पेखहिं, रसिक रसप्रद रसाल।
जिय की जरनि हरत हँसि हेरत, चित चोरत चष चाल।।
बैठि हिंडोरे केलि करत दोउ, मन मोहक वर बाल।
अलिगण निरखि सुखहिं सुख भींजीं, जय कहि होहिं निहाल।।
सुरहु मुदित सेवा करहीं, झरत पुष्प अरु माल।
हर्षण आनँद आनँद चहुँ दिशि, छाय रह्यो तेहिं काल।।

(९८४)

आली सा रे ग म प ध नी गायें।
तत्ता थेई ता थेइ थेई, नँच नँच पियहिं रिझायें।।

ताधिन्ता धिं धिं ताधिन्ता, मधुर मृदंग मोहायें।
मेघ मलार राग अनुहारत, प्रीतम वेणु बजायें।।
देखो देखो झूलन झाँकी, सब के चित्त चोरायें।
पावस लिये विभूति को अपने, श्रावण साज सजाये।।
नृपति किशोर किशोरी सेवत, आनँद अतिहिं अघाये।
हर्षण सखी प्रीति में सेवहिं, लली लाल सुख पायें।।

(९८५)

मधुर मधुर मधु अमिय झरन झरि, झुलना झुलत पिय प्यारी।
दै भुजफन्द लिपटि रहे दोउ, रसिक राय रस वारी।।
नील मणी तरु कनक लता जिमि,अरुझि रही छवि भारी।
चितवनि मुसुकनि चित को चोरनि, हृदय हरणि सुख सारी।।
पुष्प बिखरि बतरानि परस्पर, रस वर्धनि रस झारी।
अलिगन नृत्य गाय के रिझवहिं, राजकुँआर कुँआरी।।
वन विभूति वर्षा ऋतु सेवति, दृग सुख वितरन वारी।
हर्षण सुरहु सुमन झरि लावत, लखि झूलन छवि न्यारी।।

(९८६)

झुलत सजनी झूला बाँका समरिया।
सिया सहित सुकुमार सोह सुठि, सुख सुषुमा श्रृंगार अगरिया।।
चंचल चित्त–चोर चटकीलो, तकि तकि मारै मोकूँ नजरिया।
मधुरी मुसुकनि मोहक मन की, लखि मोहैं नागर नागरिया।।
लुरनि–मुरनि रस झरनि दुहुन की, हिलनि मिलनि हिय हरनि हमरिया।

झमकनि झुकनि झँकोरनि झाँकी, झलमल झलमल करत कहरिया।।
बोलकनि पुलकनि हुलकनिडुलकनि, उसकनि उचकनि अनँद अपरिया।।
दै गल बाहँहिं प्रीतम प्यारी, लिपटि रहे रसही रस झरिया।
हर्षण सुरन सुमन झरि लावत, नृत्य गान वर वाद्य बहरिया।।

(९८७)

रसिया रस वर्षाय रह्यो रे।
संग लिये रस रूपी सिय को, रसही रस दर्शाय रह्यो रे।।
सुन्दरि गौर साँवरो सुन्दर, घन दामिनि दमकाय रह्यो रे।
अरश परश आलिंगन करि करि, आनँद सिन्धु समाय रह्यो रे।।
झूलनि झमकनि झुकनि झकोरनि, अदा अनेक दिखाय रह्यो रे।
हुलसनि पुलकनि उसकनि उचकनि, उमगनि उर उमगाय रह्यो रे।।
मुसुकि मन्द मन मोहत सबको, चितचनि चोट चलाय रह्यो रे।
अलिगन नृत्य गीत वर वाद्यन, सुनि सुनि सोउ हर्षाय रह्यो रे।।
वर्षि सुमन सुर जय कहि हर्षण, देह धरे फल पाय रह्यो रे।।

(९८८)

सदा झूलैं मोरे प्यारे विराजैं संग सिय स्वामिनि।
बढ़े आनन्द झूलन का झुलावै, नेह भरि कामिनि।।
सुधा संगीत की झरि झरि, डुबावै मोद मन भरि भरि,
नचैं अलि तान लै लैके, बजावैं वीण वर भामिनि।।
मेह वरषे बूँद रिमझिम, चमकि चपला बीच थिम थिम,
नृत्य वन मोर मोरी का, सुहावै पिक कुहुक नामिनि।।

सरित सरयू ले हिलोरे, हरित महि की प्रभा जोरे,
निरखि सुख नयन तारे को, सदा हो सहित अभिरामिनि ॥
लखै झाँकी सुरहु फूले, वर्षि सुमनहिं भान भूले,
बजावै वाद्य बहु हर्षण, उचारैं जयति सुख धामिनि ॥

(९८९)

गावो गावो गावो री झूलन झाँकी मंगल।
प्रेम पगे पिय प्यारी झूलैं, सदा सुखहिं सरसावो री॥
अरस परश दै अंश भुजहिं को, मुसुकनि मधुमय पावो री।
चितवनि चारु चलत अलि ओरी, निरखत नेह नहावो री॥
रंग रँगे अरुझे आलिंगन, चुम्बनि पेखि जुड़ावो री।
नृत्य गीत वर वाद्य सुधा को, अलिगन दुहुँन पिआवो री॥
श्रावण सदा सुहावै नीको, घन दामिनि दमकावो री।
नचै मोर सरि लहरै हर्षण, सुरन सुमन बरसावो री॥

(९९०)

प्रीतम प्यारी बसो उर ऐसे।
झूलत कुँज हिंडोर हरषि हिय, रस रसिया रस लय से॥
क्रीट चन्द्रिका मुख ते मुख मिल, अधर पियत प्रिय पय से।
हिय ते हृदय मेलि भुज फंदनि, गण्ड मेलि मधुमय से॥
अरुझी अलकैं एक एक ते, मिलहिं नगिनि दुइ जैसे।
निरखि निरखि सखियाँ सुख सानहिं, मिली महानिधि तैसे॥

नृत्य गान करि वाद्य बजावहिं, रमी रहैं बिनु भय से।
हर्षण करि कैंकर्य मगन मन, जेहिंते दोउ सुख सयसे॥

(९९१)

पिय प्यारी बनै दोउ चन्दा चकोर।
उदित पूर्ण अथवैं नहिं कबहूँ, अलिन हृदय नभ करके अँजोर॥
रसते पूर्ण रसहिं करि वर्षा, सींचै सदा जन औषधि अथोर।
प्रिय दर्शन सब कहँ सुख दायक, करत रहैं जड़ चेतन विभोर॥
मुख मलीनता राहु न ग्रासे, शीतल सुखद सतत रस बोर।
परिकर उड़गन बीच सुसोहैं, हृदय हरण करि कृपा की कोर॥
साधु समाज समुद्र बढ़ै नित, देखि देखि उर उमगत हिलोर।
हर्षण हृदय हिंडोरे झूलत, रसे रहहिं दोउ चित्त के चोर॥

(९९२)

सरयू बाढ़ बिलोकन हेत।
सखिन सहित सिय लै रघुनन्दन, खड़े तटहिं के नवल निकेत॥
ऊर्मि भ्रमर छवि धार त्वरावति, पेखत प्रिय पय मटमिल श्वेत।
फेन बहत बहु होय एकत्रित, बुद बुद उपजत बहु सरि खेत॥
बहत वृक्ष तृण अरणि बेग ते, जनु अनाथ सुधि कोउ न लेत।
बहुतक बहनि लगै तट माहीं, जहँ तहँ परी सरित की रेत॥
भरे जहाज बनिज के हेतहिं, चलत सुहात फहर तहँ केत।
हर्षण हर्षहिं दोउ रसिक वर, बहुरे गृह पुनि सखिन समेत॥

(११३)

सोह शरद ऋतु सुख न समाय।
ताप हरनि सुख वर्धनि सब कहँ, प्रीति परम उपजाय।।
वर्षा बिगत गगन भो निर्मल, निशा नखत विधु भाय।
शीतल शशि प्रिय नयनन लागत, स्वच्छ सुधा वर्षाय।।
कामिनि कान्त नेह नहवावनि, कलित केलि रस छाय।
सरित सरोवर जल भो रुचिकर, फूले कमल सोहाय।।
धरा धूरि बिनु सुन्दरि सोहत, पंथ न पंक दिखाय।
रास केलि सुख चाहहिं हर्षण, सकल सखी समुदाय।।

(११४)

अलियन की रुचि जानि प्रिया प्रीतम ते बोली।
कौशल देश विदित बारह वन, सुख स्वरूप भुँइ भो ली।
बारहु मास बसन्त बहै जहँ, सुमन सुगन्ध अलोली।
शुक पिक मोर पपीहा प्रियकर, सुन्दर बोलत बोली।।
जहाँ बने विश्राम भवन बहु, केलि सदन अनमोली।
परिकर सहित चलैं तहँ प्यारे, बिहरैं बन बन डोली।।
जननि जनक लै आयसु कछु दिन, बसै शरद सुख कोली।
हर्षण हृदय आस को पुरबहि, जो पिय रुचि रस घोली।।
सिय सुख सुखी राम रघुनन्दन, चलन कहेउ नर-मौली।

(९९५)

चले वर बिहरन दोउ सरकार।
गजरथ चढ़े सिंहासन राजत, सेवहिं सखि सुख के सुख सार।।
छत्र दिये क़ोउ चमर चलावै, कोउ लै बिंजन मधुरे ढार।
पान दान इत्रादि लिये कोउ, छबि मय छडी कोऊ कर धार।।
युगल यशहिं वरणैं कोउ आगे, मधुर मधुर मुनि मोहन हार।
कोउ नृत्यहिं कोउ वाद्य बजावहिं, कोउ कहै जय रसिक उदार।।
वर्षै सुमन कोउ सुख सानी, होहिं मगन मन छबिहिं निहार।
हर्षण यहि प्रकार सुख सरसे, पहुँचे वन श्रृंगार मझार।।

(९९६)

करी वनेश्वरि बहु विधि मान।
आगे चलि आरति करि आनी, जहाँ भवन छहरत छविवान।।
आसन देय पूजि पुनि षोड़स, सुख हित कीन्ही बहुत विधान।
लखि लखि युगल रूप मन मोही, आपन भाग गिनी बलवान।।
सुन्दर सुमन श्रृंगार को करिकै, पाई मन महँ मोद महान।
वन-श्रृंगार बिहर प्रभु मोरे, करहिं सुखी तरू पता लतान।।
वन देवी के सुनि बैन विनय युत, हर्षे हिय महँ कृपा निधान।
बिहरन चले सखिन सह हर्षण, राम सिया सुख के सुख खान।।

(९९७)

बिहरत वन रघुनन्दन, प्यारी सँग सुखकन्द।
दै गलबाँह चलत छबि छहरति, मनहु अमिय की धारा प्रवहति,
रसिकन हेतु स्वछन्द।।

चन्द्रबदनि चितवनि करि बाँकी, सखिगण श्री सिय बल्लभताकी,
मधुरी मुसुकनि मन्द॥
वन सम्पति पिय प्यारिहि हर्षी, दिखरावहिं दुहु के चित कर्षी,
निरखत युग कुल चन्द॥
कुसुमित बनहिं बहत वर वायू, शीतल मन्द सुगन्ध स्वभाऊ,
सेवत सुर मुनि वन्द्य॥
कृपा सिन्धु तरु लता को पर्शहिं, प्रकृतिछटा लखि लखि हिय हर्षहिं,
यद्यपि दोउ बिन द्वन्द॥
सुरभित सुमन चुनै कहुँ दोऊ, हार गुथन हित हर्ष समोऊ,
फँसे प्रीति के फन्द॥
हर्षण सुमन नभहिं ते वर्षत, जय जय कहत हृदय अति हर्षत,
निरखि निरखि सुर वृन्द॥

(९९८)

विहरत आज अशोक विपिन में, पिय प्यारी सखि संग री सजनी।
कोटि कोटि कन्दर्प दर्प हर, नटवर वेष सुढंग री सजनी॥
मधुर मधुर रस रूप रसिकवर, पुँसा मोहन अंग री सजनी।
रामा गणन रमावत रसिया, रमत रास रस रंग री सजनी॥
रास केलि रस धार बहावत, पियहिं अली बिनु भंग री सजनी।
सच्चिद आनँद मय सुख सरसत, जहँ नहिं गंध अनंग री सजनी॥
परमैकान्तिक शाश्वत लीला, चन्द्र कीर्ति शुचि गंग री सजनी।
हर्षण करत राम रघुनन्दन, सिय के संग उमंग री सजनी॥

(९९९)

वाटिका अशोक लखी, भूलि गई भान सखी,
रासकुंज रसहिं बोर, रस हीं रस दोही॥
रास करत रामचन्द्र, रसमय रसिकेश भद्र,
मधुर मधुर हृदय हरण, रमणी मन मोही॥
चन्दन चर्चित सुअंग, वारहिं अगनित अनंग,
करत कहर कहर उरहिं, छहरति छबि छोही॥
बाजत डफ औ मृदंग, वीण वेणु झाँझ चंग,
सोह श्रवण सुखद शोर, छायो नभ ओही॥
गावहिं सखि उच्च तान, पिक बयनी पिय मोहान,
हेरि हेरि युगल रूप, रस के बस होहीं॥
अलिन बीच नचत राम, संग सिया सुभग वाम,
कला चतुर चित्त चोर, चेतन जड़ जोही॥
शब्द भर्‌यो छूम छूम, रसिया मुख चूम चूम,
चन्द्र बदनि हृदय हरत, शोभा सुठि सोही॥
आनँद आनँद विराज, प्रेम पगी सब समाज,
रसहिं रसी मनहिं मगन, हर्ष हिय टटोही॥

(१०००)

देखो सखि आवत मधुरे मधुरे।
रास कुंज कल विपिन प्रमोदहिं, विहरन हेतु अगधुरे॥
पिय प्यारी भुज अंश दिये हैं, प्रीति पगे रस अतुरे।

मन्द मुसुकि मन हरत सलोने, चितवनि चित हर चतुरे।।
अँग अँग वसन विभूषण साजे, कोटि काम विधु लजु रे।
छहरति छबी चुअति जनु महि महँ, प्रकृति छटा कहँ छजु रे।।
कर कमलनि दोउ कमल फिरावत, नटवर वेष सुघरु रे।
आगे अलिगण नृत्यहिं गावहिं, चलहिं हर्ष हिय हरु रे।।

(१००१)

सिय सुखकन्दन श्री रघुनन्दन पिय प्यारी छबि छाये। छाये हो।।
लै सखि वृन्दन चर्चित चन्दन, विपिन प्रमोदहिं आये।।
मृदु मंजु मुसुकनि मोहि मन कहँ, चन्द्र-कर सी प्रिय प्रभा,
दोउ चारु चितवनि चोरि चित्तहिं, करत बस में सब लभा,
नशि दुख द्वन्दन प्रभु स्वच्छन्दन, रास करन चित चाये।।
वर वसन भूषण साज अँग अँग, वेष नट वर दम्पति,
छबि छाजि अगनित काम रति, मुख सोह शशि शत सम्पति,
दोउ रस वर्षन जन चित कर्षण, अलियन के मन भाये।।
दै सुभग आसन लाल ललि कहँ, सेव महँ सब सखि खड़ी,
छड़ि छत्र चामर विजन दर्पन, पान गंधहिं लै ठड़ी,
लखि छबि हर्षण करि नीराँजन, प्रेम पुलकि सिर नाये।।

(१००२)

सखी सब रिझवहिं प्रीतम प्यारी।
नृत्य गीत वर वाद्य कला ते, सेई सर्वस वारी।।

परम प्रसन्न जानि जिय दम्पति, चाहहिं मनहिं मझारी।
अलिन मध्य दोउ आइ के हर्षण, रास रचैं सुख कारी॥

(१००३)

रास मध्य राजि रहे रामचन्द्र जानकी।
मिथुन मधुर रसहिं रसे, प्रेम पियूष पान की॥
नटत नवल लली लाल, रस मय रसिया रसाल,
छुमुकि छुमुकि छहर छबिहिं, वर्षि रसहिं दान की॥
नील पीत वसन सोह, लखत अली अतिहिं मोह,
थिरकि थिरकि नचन लगी, बिना देह भान की॥
वीण वेणु सुखद शोर, गीत कला चित्त चोर,
वशी किये सबहिं विश्व, भूलि सुधी आन की॥
वर्षि सुमन सुर सुवृन्द, जय जय कहि अति अनन्द,
प्रेम पगे निरखि नयन, भूलत भव हान की॥

(१००४)

नृत्यति नवल किशोरी चितय पिय ओर।
तैसहिं नटवर नागर नृत्यत, निरखत नागरि ओरी,
चतुर चित चोर॥
चन्द्र चकोर परस्पर बनिके, रसिया रसमें बोरी, सुखहिं सुख बोर,
अलकनि अलक अंश भुज मेली, गण्ड कपोलनि जोरी,
पियत रस घोर॥

मुसुकनि मधुर विनिन्दक विधु कर, मोहति मन मधु घोरी,
बनै बहु भोर॥
हृदय हरण इक एकहिं केरे, चितवनि चित को चोरी,
बड़े दृग कोर॥
फहरत पट टूटत मणि माला, गंधर्वी गति भोरी,
कला नहिं थोर।
हर्षण अली युगल रस रासी, सुख के सिन्धु हिलोरी,
काम सुख छोर॥

(१००५)

देखो राम रसिक रघुनन्दन री।
नटवर वेषा, सोह अशेषा, रसिकन ईशा, विभु जगदीशा,
नटत नवल नृप नन्दन री॥
राज किशोरा, जन मन चोरा, लखि दृग कोरा, करत विभोरा,
संग सिया सुख कन्दिनि री॥
नृत्य विभोरा, जनु वन मोरा, श्रमकन थोरा, सुख के ठौरा,
शोभित मुसुकनि मन्दन री॥
ताता थेई, ताता थेई तत्ता थेई, कहि ता थेई,
हर्षत हिय चित चन्दन री॥
नूपुर बाजैं छुम छुम छाजै, सोहत साजैं, रासहिं राजैं,
राम सिया जग वन्दन री॥
रस वर्षावैं पी पुलकावैं अली अघावैं, सुख सरसावैं,
मेटि सकल दुख द्वन्दन री॥

हिय के हर्षण, करि चित कर्षण, दै निज पर्शन, आनँद वर्षण,
अर्चित दोउ अलि वृन्दन री॥

(१००६)

उदित चन्द्र नभ चारु री।
शरद पूर्णिमा शीतल सुभगा, शशि दर्शन दुख जारु री॥
अमृत रस वर्षत निज किरणन, बल वर्धक रुज हारु री।
प्रेमिन प्रेम प्रवर्धन वारो, प्रिय कर जग नर नार री॥
देखि नवल नव नागरि नागर, चाहेउ करन विहारु री।
महारास रस वर्षै भूतल, पियैं अली सुख सारु री॥
आनँद अमित लहैं मन भावत, मन वाणी बुधि पारु री।
हर्षण हिय के वासी दम्पति, राम सिया रस वारु री॥

(१००७)

रास को रचाये रस ही रस बोर हैं।
सीतारमण राम औ रामा विभोर हैं॥
शरद पूर्ण शशि अकाश, पूरित उज्वल उजास,
सुधा वरषि कर-निकर ताप हरत जोर हैं॥
देव-यक्ष-नाग-सुता, गंधर्वी गुह्य युता,
किन्नर कुमारि गुणन गेह छलहिं छोर हैं॥
राज कन्या गोप कन्या, रस रसी धन्य धन्या,
नृत्य करहिं नवल नेह, नूपुर को शोर हैं॥

मधुर मधुर लै अपाल, गावहिं पिय को प्रताप,
वीणा वेणु वाद्य बजत, शब्द मधुहिं घोर हैं॥
मंडल मधि राजि रहे, लली लाल प्रेम बहे,
थिरकि थिरकि दोउ नचत, सोह श्याम गौर हैं॥
महारास रसहिं रसे, चेतन जड़ कीन बसे,
प्रेम सुधा धार धँसे, रसिकन सिर मौर हैं॥
रस ही रस रह्यो पूर, प्रकृति पार प्रभु न दूर,
हर्षण हिय लाय लाय, सखियन चित चोर हैं॥

(१००८)

नृत्यत आज किशोरी किशोर।
छुम छुम नूपुर नाद नवल नव, जड़ चेतन जग करत विभोर॥
वेणु बजावत मधुरे गावत, लेत अलाप मधुर मधु घोर।
ताल-मूर्छना भाव भंगिमा, रस वर्धनि भुलवनि जग और॥
कर कटि-नयन-सयनि पद पटकनि, मधुरि मधुरि चतुरन चित चोर।
मुसुकनि मिलनि परस्पर चुम्बनि, चितवनि कहर करति रस बोर॥
श्रम कन लसत मधुर मुख मंडल, वसन विभूषण अँग अँग ठौर।
हर्षण रस वर्षावनि जोरी, बसै हृदय शुचि श्यामल गौर॥

(१००९)

राम रसिक रस दोहना रे श्री सिय सँग सोहना रे।
नख शिख नटवर वेष सम्हारे, वसन विभूषण सोह अपारे,
श्याम गौर सुखधाम सुभग तन, अनुपम आनँद ओहना रे॥

मुसकनि मधुर मुनिन मन मोहति, अधर अरुणिमा लखतहिं लोभति,
कल कपोल चिक्कन रस वारे, चितवनि चित को चोरना रे॥
अलिन मध्य राजत रघुनन्दा, नखत बीच जिमि पूरण चन्दा,
थिरकि थिरकि नृत्यत सखि साथहिं, जिमि वन मोरी मोरना रे॥
हिय ते चहेउ सबहिं रस बोरा, धरेउ रूप बहु अवध किशोरा,
बिच बिच अलियाँ बिच बिच राघव, नील पीत मणि पोहना रे॥
हर्षण मंडल माल मोहिलो, पहिरि रह्यो सोइ श्याम सोहिलो,
मध्य सिया सँग बन्यो त्रिभंगी, मुख मुरली मन मोहना रे॥

(१०१०)

रसिया रस सागर में, बूड़ि रहे सिय सँग सँग में।
बिच बिच तिय बिच बिच पिय, घन दामिनि द्युति बहु किय,
अलि मिलि नव नागर में, दमकि रहीं रसि रग रग में॥
नटवर नटत छमकि के, नूपुर छुम छुम बजि के,
कर दै सखि के कर में, पुलकि रहौं सोउ अँग अँग में॥
वाद्य विविध सुख साधा, बाजत धा धा किट धा,
ता थेइ ता थेइ स्वर में, नचैं सखी सब ढँग ढँग में॥
सुर सब चढ़े विमाना, निरखहिं नयन लोभाना,
वरषि सुमन सुख सर में, गगन मगन रस रँग रँग में॥
विधि हरि हर सब देवा, सूरज चन्द्र जितेवा,
जीवन्मुक्त अधर में, नारि बने नच लग लग में॥
मिलि सब रासहिं रासे, पै प्रिय प्रेम पियासे,
हर्षण हर्ष प्रवर में, व्यापि रहेउ जिय जग जग में॥

(१०११)

श्री रघुराज रसिकन राज हमारो प्यारो री।
सुषुमा साज नव रस राज श्रृँगारो सारो री॥
क्रीट-मुकुट मकराकृत कुण्डल, केशर खौर मधुर मुख मंडल,
कोटि काम मदगार चन्द्र शत, नटवर वेष सम्हारो॥ प्यारो री॥
पुंसा मोहन रूप ललामा, श्री रसिकेश्वर रस को धामा,
एक पुरुष जग नारि रूप सब, मुसुकनि मोहनि डारो॥ प्यारो री॥
नायक धीरोदात्त सुहायो, एक साथ सब सखिन रमायो,
रमेउ राम रामा गण संगे, रास केलि रिझवारो॥ प्यारो री॥
रमत रमावत अलियन भायो, अच्युत वीर्य सुखहिं सरसायो,
सच्चिद आनँद सिन्धु भूमि पर, लहरि लसत बिन खारो॥
मधुर मधुर मुख मुरली टेरत, तिरछी तकनि तियन मुख हेरत,
बनि त्रिभंग कहुँ श्याम सलोनो, मोहत मन मतवारो॥ प्यारो री॥
आ आ आ कहुँ राग अलापत, सहित सिया सुन्दर छबि छावत,
नृत्यत सखिन सहित सुख साने, सोह वाद्य झनकारो॥ प्यारो री॥
भाव भंगिमा कहै को पारी, रसे रास जहँ पिय अरु प्यारी,
सुख की सुधा उड़ेलि पियावत, पीवत प्रिय रस वारो॥ प्यारो री॥

(१०१२)

नाचै नाचै हो आज औध उजियार कि प्रेमिन प्रेम प्रसार।
संग सिया सखियन सुख वितरत, महा रास रस अवनी उतरत,
बहिता बहत रसीली धार॥

जड़ चेतन जेहि महँ सब बहिगे, रस में मिलि रस ही रस रहिगे,
जहँ न जाय मन वाणी हार॥
यावत लता प्रमोद विपिन की, बनी नारि नहिं गती गिनन की,
दिव्य रूप मिलि रास मझार॥
नृत्य गीत वर वाद्य रिझाई, कलित कला बहु हर्ष दिखाई,
रीझे रसिक राम रिझवार॥

(१०१३)

छमकि छमकि छूम छूम बाजति पैजनिया।
थिरकि थिरकि नचत राम सुन्दर सुख खनिया॥
कानन कुण्डल किलोल, झूलति पर्शे कपोल,
मधुर मधुर मुखहिं सोह, श्रम कन छबि लनिया॥
फहरत पट पीत छोर, टूटत हिय हार लोर,
बनि त्रिभंग हरत हियहिं, अनुपम रस अनिया॥
सिया अंस भुजहिं धरे, कोटि काम रती अरे,
लाजि लाजि गर्व गरे, शोभा सुख दनियाँ॥
सखि सब मंडल बनाय, नचै कला बहु दिखाय,
सबहिं सेव रहीं स्वामि, स्वामिनि गुण गनियाँ॥
मधुर मधुर वाद्य बोल, धा धा किट धा अतोल,
तूम तना नना नना, तुं तुं तं तनिया॥
वर्षै बहु सुर प्रसून, उचरत जय जयति दून,
हेरि हेरि सुखहिं सने, भूलत भव भनिया॥

बाढ़ेउ आनँद अपार, वरणि कवी कौन पार,
रास रसे रामचन्द्र, हर्षण जिय जनिया॥

(१०१४)

रसि रास रच्यो रस वारो प्यारो राजकुमार।
रसहिं रसे रहसि राम, सोह रहीं सिया वाम,
सुख सुषमा श्रृँगारो॥ प्यारो॥
क्रीट मुकुट केरि लटक, चपल चखन मारि मटक,
चित चोर सुख सारो॥ प्यारो॥
मधुर मधुर कल कपोल, अधर अमिय मृदुल बोल,
माधुरि मुसुकनि वारो॥ प्यारो॥
छूटि छूटि उड़ति अलक, देखि देखि नयन ललक,
कुण्डल श्रवण सम्हारो॥ प्यारो॥
नटत नवल सीय संग, कीन अदा दोउ विभंग,
मुख मुरली रिझवारो॥ प्यारो॥
प्रेम पगे एक एक, मुसुकि मुसुकि चितय नेक,
मोहत मन मतवारो॥ प्यारो॥
वर्षि वर्षि सुमन सेव, जय जय जय वदत देव,
हर्षण को हिय हारो॥ प्यारो॥

(१०१५)

मिथुन परस्पर चन्द्र चकोरं, भजु मन विमल विभोरम्।
राम रसिक रसिकेश्वर रस मय, चित्त चमत्कृत चोरम्॥

चारु चिबुक नृत्यत नत ग्रीवं, कुण्डल केलि कपोलम्।
असं गण्ड एकी कृत मण्डं, नासा मणि मुद लोलम्॥
राजत रास कुञ्ज रस रञ्जित, मन्मथ-मोहन रूपम्।
अमल अकथ अनवद्यमपारं, सुख सौंदर्य अनूपम्॥
स्वादत सुधा सार रस दत्तं, परिकर प्रेम प्रसारम्।
हर्षण हृदय व्योम वर वासं, सीता राम उदारम्॥

(१०१६)

रासे रामः सखिभिर्साधं, रमति अहो अवलोकय अलि में।
वारिद वपुष श्याम सुख सारः, सीता चन्द्र चकोर दृगं हे॥
नृत्यति नागर निभृत निकुञ्जे, पद धृत नूपुर नवल निचोलम्।
मुरली मधुर अधर मन्दस्मिति, कुण्डल कर्ण कपोल किलोलम्॥
कर्णालम्बित लोचन भृकुटी, कोटि कोटि कन्दर्प विमोहम्।
कुंञ्चित केश कलित भ्रमरावलि, नासामणि सुन्दर सुख दोहम्॥
शारद-शशि-शत जित मुख शोभित, शरद पूर्णिमा पूर्ण विराजम्।
नभ दुन्दुभि सुर सुमन सु पूजित, हर्षण हर्षि हृदय हरि भ्राजम्॥

(१०१७)

रास मध्य रस राज विचार, प्रिया को प्यारो प्राण अधार॥
प्रीति परख हित प्रेम विवर्धनि, रसिकन के हिय रस संमृद्धनि,
करउँ कछुक लीला सुख सार॥
अस विचार अन्तरहित ह्वै के, कोउ न जान रस रासहिं म्वैके,
योगेश्वर बनि योगिन नार॥

सखि समूह बिच नृत्यत गावत, छद्म वेष मन मोहन भावत,
सिय कर पकड़ि कहेउ रिझवार॥
स्वामिनि प्राणनाथ नहिं दीखत, तिन बिन रस कोउ कैसे चीषत,
कहाँ गये तिहरे हिय हार॥
सुनत सिया मुख सूख चकित सी, दृग जल कम्पित वदन थकितसी,
चितवनि चहुँ दिशि प्रीतम प्यार॥
पूँछति सखिन लखे कोउ सजनी, रास करत रसिया जन रँजनी,
कितै गये श्री राज कुमार॥
हम नहिं देखी हम नहिं देखी, चित्त चोर सुकुमार सुवेषी,
हर्षण सबहिं कही मन मार॥

(१०१८)

पिय के विरह समाई सिया जू।
यदपि योगिनी रूप समीपहिं, राजि रहे रघुराई॥
चकई यथा वियोगिनि बनि के, निशा अधिक अकुलाई।
सात्विक भाव उदय तन सिगरे, दशा वरणि नहिं जाई॥
करति सम्हारि योगिनी तनकी, अरसि परसि हिय लाई।
बनी वियोगिनी सी समुझावति, प्रियतम के गुण गाई॥
सुनत सिया धारी कछु धीरज, बोली बैन त्वराई।
हर्षण वेगि मिलावहु प्यारेहिं, रहि हौ नतु पछिताई॥

(१०१९)

सखी री नहि मन धीर धरे।
जल बिनु मीन पिया बिनु मो कहँ, क्षण मपि असह अरे॥
कोउ कामिनि कमनीय कान्त को, की लै सेव सरे।
जानि न जाय हमहिं तजि प्रीतम, विहरण कहाँ करे॥
किमि रहि जात मोहिं बिन तिन कहँ, भू बिनु गन्ध न रे।
पद्म बिना मकरन्द मधुप कित, लहै प्रयत्न परे॥
अहह दैव अपराध मोर कहु, प्यारे दृगन टरे।
हर्षण मिलै नाथ जेहि द्रुत हीं, करहु उपाय वरे॥

(१०२०)

बतियाँ सुनहिं हमार स्वामिनी साधन एक विचारें।
अलि अन्वेषण करहिं चतुर्दिक, वन प्रमोद के कुँज कामिनी॥
बचे न कुंज एक यहि बन की, बिनु देखे पिय हेतु नामिनी।
मध्य कुंज खोजहिं सँग राउरि, तिहरे हेतु हमहु गज गामिनी॥
मिलि हैं अवशि पिया अँग फरकत, सुभग सगुन दृग पथहिं पाविनी।
योगिनि के सुनि बैन हृदय धरि, अलियन आयसु दीन धामिनी॥
जहँ तहँ चली सखी भर विरहहिं, पूँछत खग मृग वृक्ष भामिनी।
हर्षण योगिनि साथ जनकजा, अंस धरे भुज चली रामिनी॥

(१०२१)

बता दो कोई कहाँ गये घनश्याम।
रे अमरूद तूत तरु पाकर, वट-पीपल अरु आम्र जम्बु फर,

तुलसि कुन्द परिजात सरोरुह, नव मंदार ललाम।।
बनि वन माला प्रभु हिय माहीं, परे रहौ तुम संशय नाहीं,
लखे होहु नटवर नव नागर, रसिया रघुकुल राम।।
शुक-पिक-मोर-कपोत बतावहु, पपिहा पिउ कहि किमि तरसावहु,
जो तुम देखे प्राण पियारो, कहहु कहाँ मति धाम।।
नखत चन्द्र तुम नभहिं प्रकाशी, देखत होइहौ रास विलासी,
हर्षण वेगि बताय जियावहु, हमरे पूरण काम।।

(१०२२)

वियोगिनि योगिनि के सँग जाति।
एक कुंज ते कुंज दूसरे, दरश बिना अकुलाति।।
मन की पीर मनहिं को भाषति, झोंका विरही खाति।
शिथिल शरीर बैठि इक कुंजहिं, सुमिरति पिय गुणपाँति।।
बहत वारि दृग मुरछि भूमि पर, परी बहुत अकुलाति।
योगिन अंक सिया शिर लैके, परसति प्रेम प्रमाति।।
चेत कराय कही मृदु बतिया, मधुर मधुर मुसुकाति।
तिहरे प्रीतम हमहिं हैं प्यारी, हर्षण सत सत बाति।।

(१०२३)

प्यारी जू हमहिं तिहारे प्यारे।
तुम बिन रहि न सकैं क्षण अर्धहु, करतहु यत्न हजारे।।
तव मुख चन्द्र-चकोर दृगन करि, प्रीति विवश हिय हारे।

अरसि परसि तन तिहरो सुखमय, आनँद और बिसारे॥
पी सौगंधित वपु की गंधहि, मम मनहू मतवारे।
सुनि सुनि श्रवण मधुर मधु बोलनि, नहि अघात सुख सारे॥
चितवनि मुसुकनि मुरनि दुरनि पर, अपनो सर्वस वारे।
हर्षण रस वर्धन के हेतहि, योगिनि रूप सम्हारे॥

(१०२४)

लखत किशोरी योगिनि ओरी।
आर्द्र नयन प्रियतम की प्यासी, विहर व्यथा बर जोरी॥
पहिचानति पहिचान न पावति, पुनि पुनि होत विभोरी।
चंचल नयन बड़े कजरारे, श्याम सखी मुख मोरी॥
बोली लखहु काह मृग नयनी, श्री मिथिलेश की छोरी।
अहहुँ सत्य सत तिहरो प्यारो, संशय करहु न थोरी॥
अस कहि रसिक राय रघुनन्दन, प्रेम विवश चित चोरी।
प्रगटे नटवर वेष सम्हारे, हर्षण सिय सुख बोरी॥

(१०२५)

पिय प्यारी मिले अनुराग भरे।
दृग-त्वक-श्रवण-घ्राणआनन्दित, जिमिरवि लखतहिं कमलखिले॥
हिय ते हियहिं कपोल कपोलहिं, मेलि दिये भुज फन्द भले।
प्रेम प्रवाह बहत दोउ दृग ते, दोउ पगि परमानन्द पले॥
बैठे दोउ निकुंजहिं रसिया, सियहि विरह की बात खले।

करत रुदन बोली हे छलिया, छल करि किमि मम दिलहिं दले॥
दूखत हृदय अबहुँ का कहियत, कारेन की गति न्यारी चले।
हर्षण प्रणय कोप करि मन में, मौन सिया नहिं लागी गले॥

(१०२६)

प्राण प्रिये संजीवनि मोरी मान करहु जनि।
रुठहु किमि मिथिलेश लड़ैती, कृपा बिग्रहे क्षमा की ठौरी॥
तव मुख चन्द्र चकोर बन्यो मैं, और कार्य सब तृण सो तोरी।
योगिनि रूप धर्‍यो रस कारण, संग तज्यो नहिं तऊ किशोरी॥
दया करहु क्षमि दोष हमारे, विनती करहुँ दोउ कर जोरी।
करुण स्वरहिं नत शिर पिय को लखि, भूलि भान ह्वै देह विभोरी॥
प्राण प्रिया उठि प्रीतम भेंटी, हर्षण हृदय रसहिं रस बोरी।

(१०२७)

निभृत निकुंजे प्रीतम प्यारी।
परमैकान्त सुखहि सरसाने, बने परस्पर प्रेम पुजारी॥
पुष्प हार पहिनाय प्रिया कहँ, प्रीतम पुष्पन केश सम्हारी।
मैन शिला ते तिलक दियो पुनि, कलित कपोलनि कियो श्रृंगारी॥
पुष्पन शय्या विरचि साँवरे, पाणि पकरि सिय को बैठारी।
अरस परस आलिंगन चुम्बन, रति रस केलि कला उजियारी॥
प्रेम पगे भव भूलि लाल ललि, कीन्हे रसहिं विवर्धन वारी।
हर्षण अलिन सँकोच हिये धरि, तहँ ते चले दोउ सुख सारी॥

(१०२८)

लली लाल को लैके चली, मानो निजी निधि लीन्हे भली।
रस रस जाति रसहिं ते पूरी, रसिक राय के रंग ढली॥
दिये परस्पर अंस भुजन को, छबि छहरति चहुँ ओर गली।
सुख सुषमा श्रृँगार पयोनिधि, कोटि काम रति दर्प दली॥
करत प्रकाश प्रमोद विपिन बिच, हर्षत लखि लखि सुमन कली।
पहुँचे रास कुंज पिय प्यारी, पेखि मगन भइ सकल अली॥
आरति करि आसन पधराई, मंगल पढ़ी प्रमोद थली।
हर्षण गई महानिधि पाईं, सखियन आस अनूप फली॥

(१०२९)

स्वामिनि कहाँ मिले चित चोर, लाई संग रसहिं रस बोर।
कारण कौन छिपाय रास ते, किय करतूति कठोर॥
कारे कारे जग के जेते, चंचल चित के खोर।
पीर पराई नेक न जानत, स्वारथ सने विभोर॥
आपन अर्थ पाइ मुख फेरत, देत न हिय में ठौर।
ऐसेन को विश्वास न कीजै, चहे करै बहु दौर॥
रोवत रोवत रैन बिताई, ये विलसैं कहुँ और।
हर्षण हृदय हरण करि बन में, तजे तियन चट कोर॥

(१०३०)

रहे संग संग छिप छिपे रस वारी, वन में बने सोहे नर ते नारी।
चोली चादर सुहाय, सारी मनहिं मोहाय, भूषण अंगनि सजाय,
बेंदी सिय पै धारी॥

चंचल चषनि चलाय, टेढ़ी भौह मटकाय, लीन्हे सखिन लोभाय,
रमा रति भइ बारी।।
वीणा वेणु को बजाय, मधुर मधुर गाय गाय, काम कोकिल को लजाय,
आली मुसुकनि मारी।।
निपुण केलि कला वीर, नृत्य नृत्य सुखहिं सीर, बनहिं मिले हर्षहीर,
जानौ सखि सुख सारी।।

(१०३१)

सखी री पिय को दोष न दीजै।
साथहि रहे छनहु नहिं छोड़े, मन में तनिक न खीजै।।
नवल नागरी स्वाद कामना, नागरि बनि रस भींजे।
नटवर नागर रूप तजे ये, ह्वै नारी नृत कीजे।।
पै नहिं पाये प्रियतम प्यारिहि, खीझि स्वरूपहिं ईजे।
यहि ते सब कोइ विनवहिं स्वामिनि, राम रूप धरि लीजै।।
करि विपरीत क्रिया सुकुमारी, लाल पै नेक पसीजै।
सिय रुख चन्द्रकला हँसि हर्षण, व्यंग बोलि रस पीजै।।

(१०३२)

सुनो सुनो री सयानी सबैं निमि बालिका।
खोरि न देहिं तिहारेहिं कारण, चरित करौं सुख शालिका।।
रउरेहिं रस वर्धन के हेतहिं, वपुष बनायो आलिका।
सुठि स्वतन्त्र निर्पेक्ष शान्त मैं, पूर्ण काम जग जालिका।।

बनि परतन्त्र तुम्हारे नाचहुँ, प्रेम विवश चित चालिका।
तन मन धन सह बुद्धि आत्मा, अरपि तुम्हैं रस मालिका॥
तव रुख देखत रहहुँ तदपि तुम, व्यंग कहहु छल छालिका।
हर्षण पिया बचन सुनि सखियाँ, परी चरण प्रभु पालिका॥

(१०३३)

पाई कृपा की कोर सखी सब।
हिलि मिलि रास रंग पुनि भींजी, पिय प्यारी रस बोर॥
नृत्य गीत वर वाद्य मनोहर, छायो करत विभोर।
हर्षण युगल किशोर अलिन के, याही विधि चित चोर॥

(१०३४)

प्यारी तेरी नटनि नवल सुख दीन्ही।
रसमय रसहिं वितरि सुख पूरी, मन मोहन को मन हरि लीन्ही॥
खंजनि मंजु तिरीछे नयननि, मुसुकि मुसुकि विभु कह वश कीन्ही।
हर्षण शारद शत शशि आनन, लखि लखि जीवहुँ प्रेम प्रवीनी॥

(१०३५)

मोहि लियो मोहि प्राण पियारे।
अनुपम छबि छहराय छबीले, रास रसे रस वर्धन वारे॥
नटनि मुरनि मुसकनि मन मोहै, चितवनि चारू स्वरूप सम्हारे।
हर्षण हेरि हेरि तोहिं जीवौं, पियत अधर अमृत अविकारे॥

(१०३६)

केलि करत पिय प्यारी अलिन बिच आज।

सम्मत करि विपरीत वेष बनि, भूषण वसन सम्हारी॥
प्यारी रूप धरे प्रिय प्यारे, पिया बनी सुकुमारी।
लाल लली करि ललित सुलीला, सखिन दिये सुख भारी॥
अलिगण भेद नेक नहि पाई, को प्रीतम को प्यारी।
चलि कमनीय कुंज कहँ दोऊ, सखियन कहे विचारी॥
कौन सिया को सिय को साजन, करहु न्याय सखि सारी।
गुनि अज्ञात हँसी अलि हर्षण, प्रगटे दोउ रिझवारी॥

(१०३७)

केलि करत कमनीय नवल दोउ नई नई।

प्रीतम प्रीति परख के कारण,
चन्द्रकला लै सियहिं कतहुँ ह्वै विलग गई॥
सिय मुख चन्द्र चकोर रसिक की,
बिना प्रिया के लखे दशा दुर दुखहिं मई।
पूँछत फिरत बेलि बन वृक्षन,
तुलसि कुन्द ते कोउ उतर नहिं देत दई॥
चारुशिला सहचरी पंडिता,
पिया प्रेम की मूर्ति गुणन की गेह जई।
नाथहिं लैके चली कुँज सोइ,
जहाँ सिया सह सखी बैठि प्रभु कीर्ति कई॥

उत पिय विरह असह गुनि प्यारी,

भानु सुता के साथ इतहिं को चलत भई॥

बीचहिं मिले हर्ष हिय हियरे,

जनक लली रघुलाल वरषि सुर सुमन चई॥

(१०३८)

सिय पिय विपिन प्रमोद विहारी।

षट ऋतु लीला ललित रास की, रसहिं विवर्धन वारी॥

अलिन संग लै करत करावत, समय समय अनुहारी।

नाग-देव-गुह्य-यक्ष-कन्यका, अरु गंधर्वी गुण पारी॥

किन्नर-गोप-नृपन की दुहिता, रतिहिं लजावन हारी।

नृत्य गान वर वाद्य ते रिझवहिं, निशिदिन प्रीतम प्यारी॥

रामहु रमत रमावत तिन कहँ, केलि कला उजियारी।

हर्षण यहि विधि दम्पति विहरत, द्वादश विपिन मझारी॥

(१०३९)

विपिन विहरि दोउ आवैं युगल वर।

जननि जनक पुरवासी भ्राता, अधिक अधिक सुख पावैं॥

सचिव-साधु-गुरु-सखा सुहृद सब, मन महँ मोद बढ़ावैं।

शास्त्र संत शुचि श्रुतियन सम्मत, लीला लखि हर्षावैं॥

कैसेहु कठिन विघ्न ते रघुवर, रक्षत धर्म स्वभावैं।

आर्य धर्म वर्णाश्रम धर्महिं, प्राणन प्रिय अपनावैं॥

देव-मनुज-मुनि-नाग प्रशंसत, धर्म सभा सरसावैं।
साधु-कसौटी करसे नित्य नित, हर्षण प्रभु छबि छावैं॥

(१०४०)

नमो नमो श्री राम सिया।
चन्द्र कीर्ति उत्तम श्लोकी, अग जग के दोउ प्राण प्रिया॥
नमो आर्य लक्षण पिय-प्यारी, भगवत भगवति अनुप हिया।
दोउ उप शिक्षित आत्मा अतिशय, शील व्रता दोउ धीर धिया॥
लोकोपासित साधु सभा की, करसे कसौटी जीव जिया।
नमो नमो ब्रह्मण्य पुरुष पर, महाराज महरानि तिया॥
धर्म रूप कर्ता कारयिता, अविता धर्म को शीश लिया।
हर्षण नमो हृदय हुलसाने, विमल विमल यश गान किया॥

(१०४१)

पिय प्यारी अटन चढ़ि आज।
दीप-अवलि उत्सव दृग देखत, जेहिं विधि अवध विराज॥
करि अंगुलि निर्देश परस्पर, लखत लखावत साज।
गृह गृह भीतर-बाह्य अटारी, सरि सर सहित जहाज॥
वापी कूप राग देवालय, गली गली भल भ्राज।
जगर जगर सब परम प्रकाशित, दिवस बनी निशि आज॥
कोटि कोटि जनु भानु ताप बिनु, अवध उये छबि छाज।
हर्षण राम पुरी अवलोकत, इन्द्रपुरी अति लाज॥

(१०४२)

देखो देखो रे बनि गो अयोध्या अकाश।
दीप-नक्षत्र घने दिवि दमकत, चका चौंधि दृग चमक अभाष।।
सरयू कूल दीप की अवली, देव बीथि जनु परम प्रकाश।
भवन-दीप-प्रतिबिम्ब धार बिच, परत छहर छबि वारि उजास।।
जनु रवि-नखत-चन्द्र जल भीतर, करत केलि हिय अधिक हुलास।
जगर जगर भल भहर भहर सब, भव्य भवन की ज्योति विकास।।
जासु प्रकाश प्रकाशित दशदिक, कहत बनै नहिं दृगन विलास।
हर्षण लली लाल लखि शोभा, हर्षण हृदय सरसि सुख रास।।

(१०४३)

अलि आय गयो अगहनवाँ।
सुख संवर्धन मास परम प्रिय, रस प्रद सिया सजनवाँ।।
सखियन को सर्वस्व कहौं का, दिय सौभाग्य सोहनमा।
तेहि पै शुक्ल पक्ष तिथि पंचमि, आनँद अधिक दोहनमा।।
जेहि दिन पिय प्यारी को प्रमुदित, भैली पाणि ग्रहणमा।
तेहि ते वार्षिक उत्सव सजनी, सब मिलि करैं शोभनमा।।
भाँवरि झाँकी झूलति नयनन, मन हीं मनहिं मोहनमा।
हर्षण चन्द्रकला अलबेली, सिखवति सखिन छोहनमा।।

(१०४४)

रचो रचो री सहेली ब्याह सियवर को।
लूटो लूटो हो नवेली मोद हिय हर को।।

एक सखी को श्याम बना करि, दुसरेहि सिया बनी रचि सुख भरि,
पाणि ग्रहण हो मनहर को॥
मंडप रचना रचहु सुहाई, जनक वितान कहहु तेहिं गाई,
छहरि छटा लज सुर पुर को॥
अलिन बराती करि सनमानहु, द्वार चार करि मोदहिं आनहु,
मंडप लावहु पुनि वर को॥
जननि जनक को वेष बनाये, अरपै सखी सियहिं सत भाये,
स्वस्ति कहैं पिय गहि कर को॥
भाँवरि भरैं युगल रस भीने, लावा परसहि श्री निधि लीने,
वर्षि सुमन सुर मुद भर को॥
सिय सिर सेंदुर राम लगावें, भरैं सोहाग सुखहिं सुख छावै,
पूर्ण ब्याह हो रस धर को॥
कोहवर कृत्य करै रस रासी, हर्षण हास विलास प्रकाशी,
आनँद लहैं न सम सर को॥

(१०४५)

चन्द्रकलाजू के आँगने में सखी सुख छावै।
सीता राम विवाह सु उत्सव, सबहिं करहिं रस रागने में॥
पिय प्यारी आमन्त्रित आये, पूजी अलि भल भावने में।
प्रेम सहित परिणय निज पेखी, साने सुख सरसावने में॥
अभिनय दुलहा दुलहिन लखि लखि, तदाकर ह्वै हरषावने में।
भाँवरि देन लगे दोउ रसिया, मिथिला मधि छबि छावने में॥

अबहि होत जनु ब्याह महोत्सव, भूले सुधि सुख पावने में।
हर्षण निरखि सहेली सानी, आनँद सिन्धु सुहावने में।।

(१०४६)

अभिनय जनक लली रघुलाल।
शोभा सदन रसहिंते पूरे, भाँवरि भरत रसाल।।
निरखत पिय प्यारी दोउ तिन कहँ, गुनि प्रतिबिम्बी चाल।
बहुरि चितय समुझे कोउ अन्यहि, सदृश मम सुख शाल।।
प्रीतम प्रिया अहहिं ये या हम, करत विचार बिहाल।
अपनेहिं रूप भयो भ्रम भारी, तदाकारिता काल।।
संशय शोक ग्रसे लखि अलि कह, ये दोउ अभिनय बाल।
हर्षण साँचे समुझि आपु कहँ, दम्पति भये निहाल।।

(१०४७)

कहै को गाई सुखहिं समाई विभोर रे।
सीता राम विवाह मनावै, अँग अँग रोम रोम पुलकावैं,
सब सखियाँ रस बोर रे।।
नृत्य नृत्य वर वाद्य बजाई, ब्याह गीत अरु मंगल गाई,
कृत्य करहिं श्रुति शोर रे।।
स्वयं हर्षि दम्पति हर्षाई, आनँद अम्बुधि अति उमड़ाई,
मधुही मधु को घोर रे।।

हर्षण जानहिं रसिक सयाने, सो सुख शेष न वाणि बखाने,
अनुभव गम्य न और रे॥

(१०४८)

सखि फागुन के दिन आय गये।
पिय-प्यारी-परिकर के सँगहि, फाग-रंग रस रीति लये॥
बने वसंत बिहारी दूनहू, करिहै केलि अनन्द मये।
निरखि निरखि नव सुखहिं सरसिहैं, अलिगण अधिक उछाय अये॥
अवधपुरी के खोरिन खोरी, होरी समर उमाह कये।
लै पिचकारी नवल नारि नर, बोरिहैं रंगन चित्त चये॥
अबिर गुलाल गगन उड़ि छैहै, उर उमगहिं उत्साह नये।
हर्षण धूम मची चहुँ ओरी, भूमि व्योम सब एक भये॥

(१०४९)

खेलत वसंत कौशल किशोर, संगै सिया लै अलिगण अथोर।
बाजत डफ डमरू औ मृदंग, मंजीर वीणा वेणू उपंग॥
सारंगि सितार झालर औ झांझ, वाद्य बजत बहु मन्डल के माझ।
रागहिं पंचम स्वर में सुराग, गावहिं गुण गण क्रीडत सुफाग।
लीन्हे करहिं कंचन पिचकारी, बोरहिं सिगरे रंग मारि मारि॥
मसलै मुख महँ केशर गुलाल, चंदन चोवा दधि देह डाल।
हो हो होरी कहि समर साज, प्यारी प्रीतम दोउ दल विराज॥
हर्षण माच्यो आनन्द अपार, लालहि लालहिं दशदिशि निहार।

(१०५०)

खेलत होरी रघुकुल वीर, सुखद साँवरो सुषुमा सीर।
पहिरे वसन केशरिया शोभित, कनक वरण सिर टोपी हीर।।
तैसहि सिया सखिन सह सोहहिं, वरण वरण सब पहिरे चीर।
भरे रंग के कुण्ड अनेकन, तैसहिं भार अनेक अबीर।।
कर लीन्हे कंचन पिचकारी, भरि भरि मारहि जिमि तकि तीर।
अबिर गुलाल मसल मुख माहीं, मार झँझोरत करत अधीर।।
एकहिं एक पछेलत छल बल, गिनत न कोऊ कोउ की पीर।
हर्षण हो होरी कहि उचरत, हर्षै पिय सह अलियन भीर।।

(१०५१)

खेलत होरी अवध को वारो रंगीला।
संग सिया सहचरि रसराती, रंग महल सुख सारो।।
विविध भाँति के बाजन बाजत, उठत तुमुल झनकारो।
फाग गान मुख उचरि उचरि के, करत वसंत विहारो।।
उड़त अबीर कुंकुमा केशर, छुटत रंग पिचकारो।
भीज गयो पीताम्बर पिय को, नख शिख ते रंग धारो।।
तैसहि सिया साटिका भीजी, राम रसिक रंग डारो।
हर्षण लपटि-झपटि एक एकहिं, होरी समर सँहारो।।

(१०५२)

मोहिं अवध छैल रंग डारा।
भरि पिचकारी तकि तकि मारै, रक्त पीत रंग कारा।।

करिके छल बल चतुर चलाको, कुंकुम मुख में मारा।
आँख अबीर परी नहिं सूझो, लै गो रंग हमारा॥
सिर ते सारी विलग निरखि सो, हँसैं राम रिझवारा।
लिपट झपटि यद्यपि बहु साधन, हौहु करी बहु वारा॥
तदपि तासु के आगे आली, कछु न चल्यो मम चारा।
अस्त व्यस्त सब वसन विभूषण, हर्ष शिथिल तन सारा॥

(१०५३)

मुख मसलि गुलाल कुमारे को।
रंगन बोरि दई सखि हौहूँ, लपटि झपटि नृप वारे को॥
छीन लई कर की पिचकारी, हृदय लई सुख सारे को।
मुख-मयंक को चुम्बन लीन्ही, अमिय अधर दिलदारे को॥
लहँगा चोली चादर चमचम, दिय पिन्हाय रिझवारे को।
अंजन आंजि भाल दै बेंदी, नारि बनाई कारे को॥
पाणि पकरि बहु नाच नचाई, निरखि निरखि दृग तारे को।
हर्षण हास विलास बहुत करि, रिझई प्रीतम प्यारे को॥

(१०५४)

होरी खेलै अवध अलबेला, सखिन संग मेला।
मुसुकि मुसुकि दृग कजरे बड़रे, मारि मारि मटकैला॥
चितवनि चितहि चोराय साँवरो, मुसुकनि हिय हर छैला।
कर पिचकारी भरि भरि मारै, रंग बोरि करि केला॥
मुखहिं गुलाल मसलि बरजोरी, अपने दल द्रुत ऐला।

अस्त व्यस्त तन सारी भूषण, अली लाज प्रद भैला।।
तेहि ते ताके संग न खेलो, नहिं जावौं तेहि गैला।
रहि न जात तेहि बिन छन हर्षण, यद्यपि रसिक मोहि लैला।।

(१०५५)

देखो रंग रसिक राज राजा, धूम मचायो आजा।
दौरि मलै मुख रोरी, मारि अबीर झंझोरी,
कीन्हेव व्यथित समाजा।।
लै कर पिचकारी, फिरत चक्र अनुहारी,
रंग बोरि भल भ्राजा।।
होरी समर मझाँरी, जीति लियो सखि सारी,
वीर बाँकुरो बाजा।।
हम सब निमि नृप कन्या, जिनसम जगत न अन्या,
हार होत बड़ि लाजा।।
लपटि झपटि अलि अकड़ी, लावहु प्यारेहिं पकड़ी,
निज दल जीतन काजा।।
सुनि सिय आयसु अलियाँ, दौरीं पिय की गलियाँ,
जयति जनकजा गाजा।।
पकरि पाणि कोउ फेंटा, सौंपी सियहि दुल्हेटा,
हर्ष सकुच सिर ताजा।।

(१०५६)

लिपटि झपटि अलि पकड़े, पिय पकड़े न जाँय।
कोउ पद पानि कमर कोउ पकरी, कोउ अली अति अकड़ैं।।

झुकि झक झोरि लाल पुनि छूटत, बहुरि अली तेहिं जकड़ैं।
हर्षण प्रबल प्रयास ते लाई, सिय के ढिंग पिय सकुड़ैं॥

(१०५७)

अलि बोलीं कहो किन प्यारे हो।
सिर नत किये सकुच सरि बहि कै, बड़ी वीरता हो॥
मारि अबीर बिहाल अलिन करि, विजय विभूति पसारे हो।
गयो गुमान कहाँ सो कहियत, तियन बीच बहु हारे हो॥
कागज लिखौ अलिन ते हारे, रहहिं बसे सेवकारे हो।
स्वामिनि पैर परहु कर जोरहु, क्षमा करहिं कृप धारे हो॥
नतरू नचैहैं नारि बनाई, करि करि विविध सिंगारे हो।
हर्षण कहाँ गई बुधि वारी, बैन न एक उचारे हो॥

(१०५८)

देख सखिन की ढील निबुक रघुनन्दन।
भागि चले हरबर अतुराने, संप्रवेग मारुत स्पन्दन॥
जानि सखी दौरी लगि पीछे, रहहु रहहु बड़ नृप के नन्दन।
सिय की अली साँचि जो होइ हौं, छड़िहौ सत करवाय के क्रन्दन॥
सुनत डरे घुसि मातु के अयनहि, अम्ब अंक छिप गये अद्वन्दन।
कम्प बदन भयभीत न बोलत, अधिक डरे लखि अलि के वृन्दन॥
कही कौशिला जाहु सखी सब, छोड़ देहु अब लाल अमन्दन।
हर्षण कछु न कहीं कोउ आली, लखहिं लाल जन हिय के चन्दन॥

(१०५९)

चतुर चलाके लाल तिहारे मैया।
सूधो सम दीखहिं तव आगे, जान न जालिम जाल॥
निर्दय कठिन कुटिल पन भरि के, भितरहु करिया खाल।
गजब गुमानी अबलन बीचहिं, बने ताड़ुका काल॥
हम सब सिय की सहचरि अम्बा, निमिवंशी वर बाल।
मारि गुलाल मसलि मुख रोरी, कीन्हे हमहिं बेहाल॥
बदलो हमहुँ अवशि अब लै हैं, चलै न तिन की चाल।
हर्षण जननी फागुन अवसर, को केहि को व्रत पाल॥

(१०६०)

सुत को दई भगाय कौशिला।
आपन सखी साथ एक करिके, अन्य द्वार बतराय॥
सो सखि सिया सदन पहुँचाई, रंग रसिक रघुराय।
जेहि भय ते भागे रघुनन्दन, पहुँची बला सो आय॥
यूथ यूथ मिलि पहुँचि सहेली, लखहिं लाल सकुचाय।
अवध छैल दिलदार बाँकुरे, होरी समर समाय॥
किमि नहि खेलहु रंग रसिक वर, अंचल रहे छिपाय।
हर्षण सुनि ललकार सखिन की, चले स्वजन सुख दाय॥

(१०६१)

बहुरि मचाई होरी हरि ने।
मारि अबीर रंग रस वर्षी, कीन्हेउ बहु बर जोरी॥

देखि अली द्रुत दौरि के पकड़ी, लपटि झपटि पिय को री।
मसलि गुलाल मली मुख मंजुल, मारि अबीर झँझोरी॥
करि के स्वबस लाल को लैकै, रंग कुण्ड दह बोरी।
बोलहु कहाँ गयो बल तिहरो, कहहि बजाय थपोरी॥
करि हैं नहीं कबहुँ बर जोरी, विनय करहु सिय सोरी।
हर्षण छूट तबहिं तुम पैहौं, नतरू बनैहैं गोरी॥

(१०६२)

होरी खेलैं बर बाँकी री सजनी।
रघुकुल को उजियार बाँकुरो, राम रसिक रस छाकी॥
नयन शयनि मुसकनि मधु बोरी, वशी करनि है ताकी।
कर लीन्हे कंचन पिचकारी, कसे फेंट हँसि हाँकी॥
तकि तकि तियन रंग में बोरत, तेहि पै करत मजाकी।
मारि अबीर नयन भरि भावत, केलि करत नहिं थाकी॥
सखिन मारते बचि बचि जावत, इत उत दौरि एकाकी।
हर्षण हृदय हरणि चित चोरिन, उछलि कूदि की झाँकी॥

(१०६३)

खेलि रहे दोउ फाग रँगीले रंग कुँज में।
राम रसिक रसिकिनि सिय प्यारी, सखिन संग सुख पाग॥
बजत वाद्य अलि नृत्यहिं गावहिं, नव नेहन अनुराग।
वर्षत रंग कुँकुमा केशर, उमगि उमगि लव लाग॥

युगल किशोर छके रंग फागुन, वर्धत अलिन सोहाग।
देव वधू मिलि आनँद पागी, विविध वेष जग जाग।।
लोचन लाभ लहै भुइं आई, मानहिं निज भल भाग।
हर्षण हर्ष अवध के गैलन, बहत बिना जप याग।।

(१०६४)

होरी खेलो रघुवीर सम्हरि के।
तिहरी भगिनि इतै नहिं कोई, निर्गुन निर्बल देह दुबरि के।।
इत हैं जनक लली की सहचरि, रूप शील गुण धाम उजरि के।
छल बल चली उपाय न नेकहु, बड़ी वीरता बोर उतरि के।।
भल चाहहु भगि जाहु इहाँ ते, नहिं तो करि हैं नारि चपरि के।
अलिगण मध्य नचाय साँवरे, मलि हैं मुखहिं गुलाल पकरि के।।
मारि अबीर रंग ते बोरी, गरि है गर्व तिहार निडरि के।
हर्षण खेलहु जाय भगिनि सँग, अभयी कहत उचरि के।।

(१०६५)

आओ आओ होरी खेलो, हो निमि कुल बाला।
बातें बड़ी बड़ी जनि झारौ, बाप बिरागी भैलो।।
रंग केलि रस रीत न जानहु, होरी समर न ऐलो।
हम रघुवंशी वीर बाँकुरे, निर्भय रह सब गैलो।।
फाग रंग रस वर्धन बारे, बन्यो अवध को छैलो।
हम हैं एक बहुत दल तिहरो, होत न तउ मन मैलो।।

उतरहु समर अबहिं दह बोरौं, रंग सरित रस लैलो।
हर्षण कर लीन्हे पिचकारी, गरहुँ गर्व जो कैलो॥

(१०६६)

दोउ मिलि खेलत फाग भली।
जनक नन्दिनी दशरथ नन्दन, सँग सँग सोह अली॥
बजत मृदंग झाँझ सहनाई, दुँदुभि डफ डफली।
राग बसन्त अलापहि स्वर भरि, सुख सरि उमँग चली॥
मारि अबीर कुँकुमा केशर, मुखहि गुलाल मली।
भीज्यो रंग ते पिय पीताम्बर, सिय-सखि चुनरि-थली॥
होरी समर पछेल परस्पर, रघुवर-सखिन दली।
हर्षण जय नृप नन्दन बोलहि, कोउ जय जनक लली॥

(१०६७)

डफ बाजै हो पिय प्यारी को।
दुहुँ दिशि जय जय कार करत हैं, रंगीनि रंग बिहारी को॥
अबिर गुलाल के बादल छाये, लहीं दिशा अरुणारी को।
मारा मार मची बर जोरी, सूझ न हाँथ पसारी को॥
रंग की धार बही मिलि सरयू, लाल रंग भो वारी को।
सुर रमणी मिलि नाचहिं गावहिं, वाद्य बजहि झनकारी को॥
रंग केलि रस स्वाद कहै को, अलिगन पियहि अपारी को।
हर्षण आदि शक्ति जहँ क्रीडति, ब्रह्म संग सुख सारी को॥

(१०६८)

खेलत बसंत रघुवर रसाल, लै भरत रिपुहन लखन लाल।
सुहृद सखा संग सोहत अथोर, विहरत प्रमुदित पुर खोर-खोर।।
लै पिचकारी कर में सोहाय, वयस वपुष वेषहिं ते मोहाय।
डफ डमरू औ झांझा मृदंग, बजत वेणु वीणा औ उपंग।।
गावहिं कहि हो होरी सुफाग, भेंटहिं मिलि नव नेहानुराग।
छायो आनंद अति अवध गैल, रस मय केलि करत छके छैल।।
वर्षहिं केशर कुंकुम गुलाल, बोरहिं रंग मह वर वृद्ध बाल।
तैसहि नवल नगर नरहु नारि, क्रीड़त सुख सनि रघुवर निहारि।।
मारहि परस्पर अबिरहि झंझोरि, छाय घन सी गगनहि अथोरि।
रंग की सरि तहं सबहिं बोर, कोउ भागि बचे नहि करत जोर।।
सुर सब निरखहि चढ़ि चढ़ि विमान, वर्षि पुष्प जय जय जय बखान।
रंग इत्र वर्षहि ह्वै विभोर, गावत गुण हर्षण हिय हिलोर।।

(१०६९)

होरी खेलत आज अवध के वासी।
सरयू तीर बृहद रंग स्थल, सुखमा सदन सकल सुख रासी।।
बाल युवा वर वृद्ध नारि नर, निज अनुरूप दलहि संग भाषी।
वाद्य बजाय बसंतहि गावत, केलि करत अति आनन्द आसी।।
अबिर गुलाल उड़त मेंड़रावै, मनहुँ अरुण घन सोह अकासी।
रंग धार बहु बही मही पै, सरयू लाल भई छबि छासी।।

अनुज समेत राम संग क्रीड़त, देखि प्रहर्षे देव विलासी।
वर्षत पुष्प बजाय निशानहिं, जय कहि हर्षण हृदय हुलासी॥

(१०७०)

प्यारी प्रहर्षे सखिन सह आज।
वर्ष ग्रन्थि प्रीतम की गुनि के, उत्सव करहिं समेटि समाज॥
बजत बधाव गहागह द्वारे, दान लहे अगणित द्विज राज।
पंचधुनि छाई भरि अवधहि, मंगल मय सब सुख को साज॥
फहरत ध्वजा पताका चहुंदिशि, मणिन चौक गलियाँ भ्ल भ्राज।
नृत्यहिं नारि विदूषक स्वांगहि, करतविविधविधितजि के लाज॥
सुरहु विमान चढ़े नभ निरखहि, वर्षहि सुमन जयति जय गाज।
आनँद मगन पुरी नर नारी, मंगल पढ़त हर्ष हित काज॥

(१०७१)

पिय को आनँद कहि न सिरात।
प्यारी जन्म महोत्सव समुझत, प्रीति न हृदय अमात॥
अलि सह उत्सव करत करावत, सुख प्रद सबहि सोहात।
विप्रन दान विविध विधि दीन्हें, सबहि गये हर्षात॥
विप्र वेद वर विरदहि वर्णत, बन्दी भांट जमात।
नृत्य गान वर वाद्य मधुरिमा, पीतउ कोउ न अघात॥
तियन सहित सुर चढ़े विमानन, वर्षि सुमन पुलकात।
प्रमुदित हनहिं निशान जयति कह, हर्षण प्रेम प्रमात॥

(१०७२)

राजत कनक महल पिय प्यारी।
रत्न सिंहासन सखियन सेवित, झाँकी अति उजियारी।।
कोटि काम रति मद हर मूरति, सुख सुषमा श्रृंगारी।
कोउ अलि छत्र चमर लिय कोऊ, कोउ बींजन सुख कारी।।
इतर दान कोउ पान दान लिय, कोउ छड़ी छबि बारी।।
कोउ नृत्यहिं कोउ गावहिं सुख सनि, भाव भंगिमा न्यारी।
कोउ लै तान बजावहिं वाद्यहिं, कोउ अलाप सुख सारी।
हर्षण पियहि पियावहिं रस कहँ, सखि सिय-पिय-हिय हारी।।

(१०७३)

बाँकी झाँकी निहार अलि भई बलिहार।
सुधा समुद्र मनहुँ दुइ एकी, लहरत लहरि सबन्ह सुख सार।।
छबि की खानि कणहिं ते उपजत, शत शत कोटि चन्द्र-रति मार।
क्रीट-चन्द्रिका भानु कोटि सम, जगमग जगमग ज्योति अपार।।
नख द्युति जगत ज्योति की उद्गम, रवि-शशि-नखत-अग्नि जो धार।
सुख सुषुमा श्रृंगार पयोनिधि, रस में रसी रसहिं रस झार।।
हर्षण हर्ष प्रवर्धनि हिय में, अनुभव गम्य मनहि के पार।
नख शिख वसन विभूषण भूषित, वर्णहि छबि एक एक निहार।।

(१०७४)

पिया जू के अरुण वरण वर तरवा।
जिनके छुद्र अंश ते शोभित, कमल कली मधु भरवा।।

अंकुश-कुलिश-कमल-कल्पद्रुम, उर्ध्व रेख ध्वज धरवा।
मुनि मन मानस हंस निरन्तर, विधि हरि हर हिय सर्वा॥
जनक लली करतल ते लालित, भक्त उरहि के हरवा।
सुन्दर सुख के खानि सरस अति, छबि श्रृँगार के धरवा॥
मंगल मय मधुरे मन मोहक, वशीकरण दुख दरवा।
हर्षण लगन लगैबे लायक, सदा रसहि रस झरवा॥

(१०७५)

प्यारहु पिय के पद पंकज चित चाय।
मुनि मन मधुप बसैं जहँ अहनिशि, हर हिय रहे छिपाय॥
निरखि अली पद तलनि ललाई, कमल गुलाब लजाय।
सुभग रेख अड़तालिस अंकित, जेहि ते जग उपजाय॥
नख द्युति चन्द्र-अवलि सम सोहति, प्रिय-कर रस वरषाय।
पद तल अरूण सुपृष्ट असित अरु, श्वेत नखन छबि छाय॥
गंग जमुन सरसुति प्रयाग जनु, दुर दिन दोष नशाय।
हर्षण हृदय सिंहासन रखि के, सेवहु सखि सुख पाय।

(१०७६)

पियाजू के नूपुर पद में सोह।
बनेकनक-मणि के अति सुन्दर, सुर-मुनि-मदनहु के मनमोह॥
चरण कमल चुम्बत बड़ भागे, रुन झुन शोर करत सुख दोह।
राग रागिनि भेद के ज्ञाता, लाजत साम श्रुतिहुँ बिनु कोह॥
हर्षण अली सुनहि निज श्रवणन, सुखी होंहि पुनि पुनि तिन जोह।

(१०७७)

सखि लखु सिय पद की अरुणाई।
क्या गुलाब क्या कमल किंसुका, क्या महावरी ललाई॥
मधुर मधुर सुन्दर सुकुमारे, सहज सुगन्ध समाई।
अति लावण्य कलित कोमलता, लोनी लस ललिताई॥
अंकुश-कुलिस-कमल-ध्वज अंकित, ऊर्ध्व रेख छबि छाई।
हरण ताप त्रय मुनिन सुसेवित, योगि रमत जहँ जाई॥
सुख के सिन्धु पियहु लखि ललचत, अतिशय आनँद पाई।
हर्षण-चित्त मधुप मेड़रावै, पद तल पंकज धाई॥

(१०७८)

सियाजू के शीतल सुखद सुतरवा।
क्या मक्खन क्या चन्दन चिक्कन, क्या श्रीखंड सुखरवा॥
जाके शीतलता के आगे, शीतल तत्वहु थोरवा।
अरुण अरुण अरु मधुर मधुर अति, मनहुँ अमिय के घरवा॥
योगि धेय शिव-सेव्य सुखाकर, रसिकन के रस झरवा।
जग कारण तारण भव सागर, रेखन के उजियरवा॥
प्रेम प्रवर्धक चित्त चोरावन, हरिजन हिय के हरवा।
हर्षण शान्ति निकेतन सबके, नाशक जरणि जियरवा॥

(१०७९)

किशोरी जू के सोहति पग पैजनिया।
कनक मई नव रत्न जड़ी जो, भाग्यवती सुख सनिया॥

परसि परसि स्वामिनि–पद पंकज, पुनि चुम्बति धनि धनिया।
रुन झुन रुन झुन शब्द रसहिं झरि, मोहति मधुर मोहनिया।।
जाहि सुनत जड़ चेतन भूलत, भव को भान लोभनिया।
पियहूँ सुनत प्रिया रस छाकत, विसरत सबहि अपनिया।।
साम श्रुतिहु सुनि सकुचि रहत जेहिं, मधुरे स्वरन सुहनिया।
हर्षण हृदय हर्ष उपजावनि, प्रेम प्रवर्धनि थनियाँ।।

(१०८०)

प्रिया जू के नूपुर की झनकारी।
पिय के श्रवण परी करि छोभित, आकर्षी हिय हारी।।
औचक अकनि अचम्भित सेवनि, सुनत शब्द सुख कारी।
करत विचार कहाँ ते कानन, आयो रव रस वारी।।
धरत धीर नहि चित्तहु चंचल, धुनि के साथ सिधारी।
पुनि पहिचान विभोर भये सो, को हम कहाँ बिसारी।।
रसमय रसिक राय रस साने, आनँद लहे अपारी।
श्रवणन को फल पाय के हर्षण, हर्षे अवध बिहारी।।

(१०८१)

कटि केहरि वाला, अतिहि निराला,
सिय को सजन सखि देखो दृगन।
करधनि धारे, हिय को हारे,
मुक्तालर हाला, सुख को शाला,
मन को मगन करि लागै लगन।।

जड़ित सुफेंटा, कमर लपेटा,

छहरत छबि जाला, रसद रसाला,

दुख के हरन को कीजो परन॥

हर्षण हार्‌यो, सर्वस वार्‌यो,

धनि दशरथ लाला, प्रणतन पाला,

शोभा सदन कटि किंकिणि नदन॥

(१०८२)

सिय जू की पतरी लखो करिहैंया।

सुन्दर सीम नयन सुख वर्धनि, उपमा एक न ऐया॥

रत्न जड़ित कमनीय कनक की, करधनि जहँ दरशैया।

जेहिते लटकि हलकि मणि लरियाँ, झूल उरू छबि छैया॥

लचकनि ललित लसति री सजनी, काह कहे कोउ गैया।

लखि लखि लाल जाहि सुख पावत, परसि परम सुख पैया॥

यहि ते अधिक कहा छबि वरणौं, छबि धर छुअन चहैया।

हर्षण सिय स्वामिनि मधि अँग की, शोभा अनुप अमैया॥

(१०८३)

कण्ठ–वक्ष अरु उदर निहार पिया को।

शोभा खानि सहज ही सुन्दर, मन मोहक सुख सार॥

कनक–मणी–नवरत्न के धारे, कण्ठी कण्ठाहार।

जग जगात जनु भानु उये तहँ, ज्योती विविध प्रकार॥

बृहद विराज माल वैजन्ती, जेहिं की छबी अपार।

(१०८४)

प्यारी जू के उर अरु उरज रसाल।
छबि के धाम नयन के नन्दन, प्रिय दर्शन सुख शाल॥
जेहिं प्रिय परशि पेखि मुद मानत, तेहि बिन होत बिहाल।
रहत रसे निज हियहिं लगाये, तजत न कवनेहु काल॥
हर्षण कल कण्ठी कल उदरी, सियहिं छजत मणि माल।

(१०८५)

पिय जू को आनन प्यारो प्यारो लगै।
वारि जाहिं शारद शशि जापै, सुधा सिन्धु उजियारो लगै॥
शीतल सुखद मधुर मधु दर्शन, पिय कर प्रेम प्रसारो लगै।
सुख सुषुमा सौंदर्य को सागर, शुचि श्रृँगार सम्हारो लगै॥
छबि की खानि लखत जेहि आली, कोटि काम मिलि खारो लगै।
ललित ललित लावण्य लोनाई, मन मोहन सुख सारो लगै॥
उमा रमा रति शची शारदा, सुर-मुनि-तिय दृग तारो लगै।
हर्षण सबै बिकानी मुख पै, पतिहिं भूलि हिय हारो लगै॥

(१०८६)

पिय मुख का मधु घोल रे, पीवो प्रेम पगे रे।
प्रिय पदार्थ त्रिभुवन के जेते, अमृत हूँ नहिं तोल रे॥
सदा प्रसन्न प्रेम ते पूरित, जहँ निकसत मृदु बोल रे।
दृग ते देखि चित्त ते चिन्तन, ध्यान धरहु बिन डोर रे॥

मुनि मन हरण शम्भु को सर्वस, सिय को प्राण अमोल रे।
परिकर जन के जीवन धन गुन, बिनु देखे जिउ लोल रे॥
आनँद कन्द परम सुख भौमा, शाश्वत इक रस घोल रे।
हर्षण हेरि हेरि हर्षावहु, अन्तर के पट खोल रे॥

(१०८७)

परम प्रिय प्यारी मुखहिं निहार।
अति सुख पाय पलक नहिं लावत, प्यारो प्राण अधार॥
झरि झरि अमिय चुअत जेहि तेरे, जो नहिं चन्द्र मझार।
दृग दोनन भरि भरि पिय पीवत, नहिं अघात सुख सार॥
आनँद वर्धक हिय अहलादक, प्रिय कर अकथ अपार।
परिकर वृन्द नित्य परिपालक, जीवन धन छबि वार॥
सुमिरत जाहि जगत जड़ जीवहु, होहिं बेगि भव पार।
हर्षण हुलसि हुलसि सिय सखियाँ, कहत सुनत हिय हार॥

(१०८८)

मोरी आली देखो लली को सु आनना।
रती रमोमा शत शत जेती, निरखि लजहि रद चाँपना॥
शशि शत कोटि शारदी जेहिं पै, वारहिं वदन सु आपना।
सुधा सिन्धु लहरत अति मीठो, पियत पिया बिनु मापना॥
छन छन वर्धमान बिनु अंतहि, तथा मधुरिमा थापना।
पिय प्रतिबिम्ब परत जब जापै, लखत रसिक दृग झाँपना॥

प्यारत चुम्बत जिय नहिं थाकत, चषत रसहिं रस खापना।
हर्षण भाग्यवती सखि सिगरी, सेवहिं सिय तन ताप ना॥

(१०८९)

सखि सिय को लखु आनन लोनो।
प्राणन ते प्रिय प्यारो हमारो, चन्द्र कोटि छबि खोनो॥
रस की खानि रसकि को जीवन, सतत रसहिं रस बोनो।
शोभा सिन्धु कहत को पारहिं, प्रेम प्रवर्ध अहोनो॥
आनँद कन्द मिठास अनूठी, अकथ अपार अयोनो।
देखि विकात राम रघुनन्दन, लोचन लाभ लुभोनो॥
रहि न सकत क्षण पलहु लखे बिनु, सुन्दर श्याम सलोनो।
हर्षण भली भाग री सजनी, सिय सखि भई नमो नो॥

(१०९०)

सिय को मधुर मुखाम्बुज हेरा।
करि गुँजार पिया दृग मधुकर, तहँ हठि लीन्ह बसेरा॥
पियत मधुर मकरन्द तृप्त नहिं, रसिक राय रस प्रेरा।
सुधा स्वाद अनुभवत कहै नहिं, यथा मूक गुड़ केरा॥
कबहुँ संकुचित-संशय आनत, होत विकल बहुतेरा।
देश काल सुधि भूलि जगत की, जान न साँझ सबेरा॥
रस मय रमत रसहिं में अहनिशि, छोड़े मैं अरु मेरा।
हर्षण कहौं कहा छबि वाकी, सेवहु सब बनि चेरा॥

(१०९१)

सिया मुख की लखोरी लोनाई।
क्या चन्दा क्या कमल जगत की, फीकी सब सुन्दरताई॥
सुख सुषुमा श्रृँगार रसाम्बुधि, शोभा कहि न सिराई।
हर्षण सुख के सिन्धु पियहु लखि, अनुपम आनँद पाई॥

(१०९२)

पिया की अलकैं अति गभुआरि अरे।
अँतर भरी कारी घुँघरारी, सुठि सुन्दर अनियारि॥
चिक्कन पतरी प्राण पियारी, नयन लुभावन वारि।
छुटि छुटि परति कपोलनि मधुरी, मन मोहनि हिय हारि॥
जनु मकरन्द पियन अलि अवली, कमल कोष गुँजारि।
रसिकन प्राण हरति सो शोभा, बरबस भव ते तारि॥
अनुपमेय आनन्द प्रदायिनि, जो जन जीवन धारि।
हर्षण सेइ तिनहिं निज कर ते, प्यारहिं सखि सुख सारि॥

(१०९३)

जुलुम करैं सिय साजन की जुलुफैं।
अजब अनोखी जहाँ में जालिम, सिद्ध भई सगरै॥
जौहर करति तबहिं सो जबहीं, छूटि कपोल परैं।
करति रहैं कतलाम अहर्निशि, हर्षण हृदय हरैं॥

(१०९४)

सियजू के केश लखो तो एरी।
चिक्कन चिलकत अतर के बोरे, दिगन सुगन्ध बिखेरी॥
कारे कारे अति गभुआरे, सटकारे सुख देरी।
पतरे प्रिय सौभाग्य प्रवर्धक, लखत शीश रस प्रेरी॥
उपमा कहहुँ हृदय महँ सकुचत, अलि अवली जनु घेरी।
मणि युत पुष्प श्रृँगार ते सज्जित, जाहि पियहु धिय धेरी॥
परसत पाणि परम सुख पावत, निरखि नयन फल लेरी।
निज कर ते पुनि तिनहिं सम्हारत, हर्षण हिय को हेरी॥

(१०९५)

प्यारी जू के प्यारो केश सम्हार।
अँतर लगाय के पाटी पारत, निज कर कंज पियार॥
परसि परसि मन मोद मगन ह्वै, प्यारत हिय को हार।
वेणी गूँथि सजत चूड़ामणि, सुन्दर सुमन श्रृँगार॥
माँग भरत सिंदूर की रेखन, जनु छवि सीम सुधार।
निरखि निरखि नयनन रस पीवत, कहत कवी को पार॥
नासा लै सुगन्ध सब भूलत, रीझि रीझि रिझवार।
हर्षण कबहुँ न कच इक टूटै, सिय सुख लहैं अपार॥

(१०९६)

सुन्दरि सीता सोह जिमि तिमि उनकी चोटी।
नागिनि सी सो लस रही, नितम्बनि लौं लोटी॥

रत्नन गुच्छन गुंफिता, वेणी छबि छाया।
पुष्प सुगन्धित मेलिके, सौरभ सरसाया।।
सखिगन सुभग सम्हारि निज, नयनन फल पाई।
आनँद मगन विभोर सब, देहहिं बिसराई।।
प्यारो पेखत प्रेम पगि, रस ही रस रासे।
हर्षण परसि स्व पाणि ते, डसि गे सुख आसे।।

(१०९७)

प्यारे जू को भहर-भहर भल भाल।
अर्ध चन्द्र सम लसत लखो सखि, रसिकन हेतु रसाल।।
केसर खौर तिलक त्रय रेखन, सोहत शोभा शाल।
हर्ष वर्तुलाकार क्रीट ते, झूलत मणियन माल।

(१०९८)

सजनी प्यारी जू को भाल भलो।
अष्टमि विधु सम बेंदी भूषित, विद्युति कान्ति थलो।।
केशर खौर लाल लघु बिन्दी, लखि लुभ राम ललो।
हर्षण कुन्तल केश पादि ते, बढ़ सौंदर्य बलो।।

(१०९९)

मैं रघुनन्दन कानन पै वारी।
सजे सोह मकराकृत कुण्डल, मदन मीन छबि हारी।।
अलकावलि जहँ परस करति है, कुँचित कारी-कारी।

मणि माणिक मुक्तन के गुच्छा, झूल मुकुट ते आरी।।
देखत कहहु कौन नहिं लोभे, हर्षण नर हो नारी।

(११००)

परम प्यारे लागे श्रवण सिय तोर।
कर्णफूल ताटंक विभूषित, वितरत अतिहिं अँजोर।।
कुन्तल केश की पाटी परसति, जेहिं ते छबी अथोर।
सुन्दर सुभग सुहावन अतिशय, पियहू के चित चोर।।
हर्षण जीव विनय सुन अहनिशि, करत कृपा की कोर।

(११०१)

पिया की बंक भ्रू भ्रम कई।
काम को धनु मनहु सोहे, देखि मुनि मति गई।।
नयन बाण जहँ रोपि सदा, हनत महा विजई।
एक बार नहिं चूकत सो, लक्ष वेध बझई।।
हर्षण हठि करिके घायल, सुधि बुधि खोय दई।

(११०२)

सखि सुनियो रे भल भावन की।
भावन की हिय हर्षावन की।।
प्यारी भौंह भरी आनन्दनि, गगन घटा जनु सावन की।
परिकर शालि हेतु नित उनई, रस ही रस वर्षावन की।।

वशीकरनि हिय हरणि सलोनी, प्रियतम चित्त चोरावन की।
बंक बड़ी सुख दंक अंक बिनु, हर्ष काम धनु दावन की।।

(११०३)

लखो मोरी आली श्री रसिया के रस भरे नैन।
कंज–खंज मृग–मीन मदन के, लजत रहत दिन रैन।।
कृपा दया करुणा के पूरे, क्षमा–शील मधु ऐन।
वर्षत रहत अमिय छन छनहीं, जनहिं सदा सुख दैन।।
शीतल सुभग सरस जग जीवन, धरत ध्यान शुचि सैन।
जासु कोर निरखत विधि हरिहर, करत काज चित चैन।।
हर्षण प्यारी हिय हर्षावन, करन सबहिं बिनु मैन।

(११०४)

सखि नयना पिया के मोहना, बगरे श्रवण लौं सोहना।
कज्जल कलित रेख ते रञ्जित, चंचल रस के दोहना।।
सुन्दर सुख के श्रोत सुभगतम, को न चहै जिय जोहना।
सकृत विलोकि जिनहि दृगवारे, फिरि न लखै जग छोहना।।
हर्षण हेरि अपनपौ खोये, विगत काम मद कोहना।

(११०५)

पिया जू के अखियन की बलिहारी।
चंचल चलत रहैं अति चोखी, रसिकन हेतु कटारी।।

अनुपमेय देखत चित कर्षति, श्वेत श्याम रतनारी।
अञ्जन सान चढ़ी चटकीली, बरबस स्वेच्छाचारी।।
हर्षण बचत न निरखन वारे, छप-छप मारत मारी।

(११०६)

अलि चित चोरवा के दृग बड़े चोर।
चितवनि चित्त चोराय जनन के, राखत रस में बोर।।
फँसि के कोऊ भाग न निकसत, यतनहिं करत करोर।
वशी करन बड़रे बुधिवारे, जुलुम करत बड़जोर।।
सर्वस लेंय देंय नहिं नेकहु, स्वारथ रत सिर मौर।
जियत मरत झूमत दिन बीतत, जग जिउ रहत विभोर।।
तेहिं पै कृपा-कोर कवि वर्णहि, यद्यपि बड़े कठोर।
हर्षण तबहुँ तिनहिं ते ओटहिं, रहि न जाय बड़ि खोर।।

(११०७)

सजनी मोरी सिय जू की आँखन आयों।
बाँकी काह रह्यो अब पावन, तेहि को सरवस पायों।।
नेह भरी चितवनि ते चितई, सब विधि अपुन बनायो।
कृपा-वारि वर्षत दिन रातिहिं, सुख के सिन्धु समायो।।
हर्षण सब अपराध क्षमा करि, सेवा माहिं लगायो।

(११०८)

प्यारी प्यारी जू की चितवनि मीठी।
शील भरी संकोच की अयना, जग रस जानति सीठी।।

छमा दया कृप करुणा पूरी, अतिहिं रसीली दीठी।
जेहि को स्वाद चखत निशिवासर, प्यारो न कबहुँ उबीठी॥
हर्षण मधु ते मधुर कहौं का, राम न देवत पीठी।

(११०९)

किशोरी जू के नयन नवल बड़े बाँके।
कजरे बड़रे कान लों बगरे, अगरे कृप करुणा के॥
कंज-खंज-मृग-मीन ते सुन्दर, सम अतिशय नहिं जाके।
श्वेत श्याम रतनार रसीले, सुधा भरे छबि छाके॥
जाहि पियत छन छनहिं साँवरो, मन सहु कबहुँ न थाके।
लखतउ लोचन लाभ की लालच, बनी रहत हिय ताके॥
ओट होत तनि चैन न पावत, बहुती विरह समा के।
हर्षण हेरि हृदय में हर्षत, आनँद उदधि अमा के॥

(१११०)

सिय जू की सैन चलत पिय ओरी।
भौंह कमान नयन शर चोखे, कज्जल विष ते बोरी॥
रोदा कोर चढ़ाय सहज हीं, चतुरि चितय के छोरी।
होत विहाल बाण ते घायल, राम रसिक सिर मौरी॥
तन-मन-बुद्धि-आत्म विष फैली, हिय कहँ करत विभोरी।
देखि कृपा करुणा करि स्वामिनि, सुधा वर्षि दृग कोरी॥
निज प्रियतम कहँ परिश के प्यारति, परस देय तेहिं सो री।
हर्ष लहत तब कछु चेतनता, पै चित्त गयो चोरी॥

(१११११)

बदरा वारि भरे मेड़राये।
प्यारी आँख अकाशहिं अहनिशि, कारे कारे छाये।।
चितवनि चपला चमकति जब तब, पुनि घन बीच छिपाये।
पिय-मन-मोर नचत जेहिं निरखी, परम प्रीति सुख पाये।।
कृपा सुधा पय वर्षत छन छन, परिकर सर उमड़ाये।
जड़ चेतन जग जीव शालि हित, रहत सदा नियराये।।
कबहुँ न निरस विलोकेउ कोऊ, शीतल सुखद सुहाये।
हर्षण पियहु सदा दृग दोनन, सोइ जल जिय ललचाये।।

(१११२)

हमारे सिय जू की अँखिया अभिराम।
कज्जल रेख कोर लगि निकली, कान ओर छबि धाम।।
मनहु श्रवण ते कहति तू सुनियो, दीन-विनय अठयाम।
कारी कारी बड़ि अनियारी, अरुण श्वेत निष्काम।।
अमृत भरी सदा सुख दयनी, रस प्रद रस की ठाम।
शील-सनेह की सागर सत्यहिं, नित निरखत घनश्याम।।
पलक पहरु आरक्षित अहनिशि, चितवनि ललित ललाम।
हर्षण कृपा कोर के चितये, सबहिं लहत विश्राम।।

(१११३)

मोहि लियो हिय हारी, प्यारी चितवनि जादू डारी।
नाम मृगाक्षी अरु मीनाक्षी, खंजनि नयनि पुकारी।।

कमल लोचना कहत कवीजन, पै ये अंश विचारी।
चितवनि चितय पिया पद एकहुँ, चल न सकत रिझवारी।।
आतुर होत हृदय लगिबे कहँ, छन पल जात न टारी।
वशी करन वश रहत सिया के, मानत मोद अपारी।।
लोचन लाभ लोचननि जानी, रसिया रहत निहारी।
हर्षण कृपा कोर जेहिं निरखी, अलिगण रहहिं सुखारी।।

(१११४)

पिया जू के नीके लगत कपोल।
अरुण श्याम चिक्कन रस वारे, चमकत चारु अतोल।।
कुण्डल झाँई परत लगत जनु, मछरी करत किलोल।
देखि देखि नव नेह भरी सखि, रसिकन को मत डोल।।
हर्षण धनि प्यारी जेहिं परसति, पीवति रस को घोल।

(१११५)

सखि लखु प्यारे प्यारी कपोल लुभाये।
परसत पानि नयन ते निरखत, चूमत मुख ते मोहाये।।
निज मुख छाँह निरखि तिन माहीं, गण्ड ते गण्ड सटाये।
हिय के हरण मनन कर मन ते, आतम बुद्धि लगाये।।
कनक-कमल मकरन्द पान को, अलि बनि तहँ मेड़राये।
पियत रसिक रस कहँ निशिवासर, तदपि न कबहुँ अघाये।।
अति आश्चर्य चूषतउ ललचत, नव नव सुखहिं समाये।
हर्षण आनँद सिन्धु कपोलनि, थाह न कहुँ पिय पाये।।

(१११६)

अहह पिय जू के अधर अमिय रस बोर।
अरुण अरुण सुन्दर सुकुमारे, मधुर मधुर चित चोर॥
तेहि पै भावति पान की लाली, लखि ललचत मन मोर।
कहर कहर हिय लेत करोये, बढ़ी प्यास जिय जोर॥
जो एकान्त कहुँ मिलैं सखी पिय, पिऔ मधुर मधु घोर।
मोहि ते भली अहै नक मुक्ता, हलकति हृदय हिलोर॥
धन्य भाग्य सिय स्वामिनि केरी, पी स्वछन्द अथोर।
हर्षण हमहुँ पियत दृग द्वारे, सब रह बनी विभोर॥

(१११७)

अलि पिय अधरन की लखु लाली।
तेहिं पै पान शोणिमा शोभित, शुचि श्रृँगार की शाली॥
जिनहिं देखि बिम्बा फल लाजत, उपमा एक न खाली।
मधुर मधुर अमृत रस पूरे, पियति जनक की बाली॥
हर्षण निरखि-परशि कोउ हर्षत,कोउ सुनि होत विहाली।

(१११८)

सिय अरुण अधर ते अमिय झरै।
मुख लगाय पिय पियत अहर्निशि, तऊ न ताको पेट भरै॥

सुन्दर स्वाद स्वादि सो साजन, महा महिम्न भयो अजरै।
परमानन्द के सिन्धु समाये, रस मय लीला ललित करै॥
हर्षण निरखि निरखि सब सखियाँ, प्रियतम प्रेम प्रवाह परै।

(१११९)

सिय के अधरन की अरुणाई।
लखत बनै वाणी नहिं आवै, बिनु अनुभव को गाई॥
निरखत नयन बचन नहि तिनके, वाक बिना दृग जाई।
क्या बिम्बा क्या कमल गुलाबहु, पटतर एक न आई॥
जिनहिं निरखि रघुनन्दन रसिया, निशिदिन रहत लोभाई।
सुधा सिन्धु सो सदा निमज्जत, और सबै बिसराई॥
हम सब धन्य सखी लखि लोचन, आनँद लहैं अघाई।
अनुभव करहिं अनन्तन कल्पन, हर्षण पिय सुखदाई॥

(११२०)

विधुकर निकर विनिन्द हँसी रे।
रसिक राय रघुनन्दन की सखि, अधरनि विकसि लसी रे॥
मुसुकि मन्द दाड़िम दन्तावलि, केहि नहि कियो वशी रे।
मन मोहनि चित चोरनि सबकी, नयननि नीक धँसी रे॥
हर्षण हिय की हरणि सलोनी, को लखि नाहिं फँसी रे।

(११२१)

प्यारी सिया की हँसनि सुधा सी।
शशि कर निकर लजावनि सुखमय, सुन्दरि सहज प्रकाशी॥
जिय की जरनि हरनि मधु मुसुकनि, हेरति होत सुपासी।
देव देव दाशरथी जेहिं के, मनसा भये उपासी॥
हर्षण हेरि भूलि सब प्रभुता, वशी रहत दृग आसी।

(११२२)

पिया की भुज पै हौं बलि जाति।
बड़ी बड़ी जो जानु लौं जावति, विविधि विभूषण भाति॥
अभय दानि बलवानि समर्था, परिकर परशि सुहाति।
जेहि धनु भंजि प्रिया को पाणी, ग्रहण करी सुख दाति॥
हर्षण वृषभ कंध ते निकसी, नयनन प्रिय छबि छाति।

(११२३)

प्यारी जू की भुजनि अली।
बार बार बलि बलि जइये, जेहि ते सबहिं पली॥
अभय करनि सुख शान्ति प्रदायिनि, अनुप अनन्द थली।
वसन विभूषण भूषित सुन्दर, शोभा सींव भली॥
हर्षण परसि जाहि सुख सानत, राज किशोर बली।

(११२४)

पिय की लखु लाल हँथेली री।
शीतल सुखद कमल ते कोमल, परसत सुख सम्मेली री।।
सकल सुलक्षण रेख रंजिता, शोभा सकल सकेली री।
करज-कंज-कमनीय कहौं का, मुदरी मोह अकेली री।।
हर्षण पर्शि प्रिया जेहिं आनँद, पागहि सहित सहेली री।

(११२५)

अरुण कंज कर तलिया प्रिया जू की।
रसमय रस वर्धनि सुख सारी, शीतल सुखद अँगुलिया।।
सकल सुलक्षण ते संपन्ना, रेखा लसत सुथलिया।
जा कहँ पेखि परशि पिय पागत, आनँद सुधा प्रबलिया।।
हर्षण हमहुँ कृपा को पर्शहिं, पाइ सुखी सब अलियाँ।

(११२६)

सखि पट पीत की छबि आन।
कहर-कहर हिय करत परश को, सुन्दर सुख की खान।।
क्या विद्युत क्या भानु की भहरनि, अनुपम आभा जान।
धन्य भाग या वसन की सजनी, पिय तन नित लपटान।।
हर्षण हमहुँ पीताम्बर होती, परसति श्याम सुजान।

(११२७)

प्रिया जू की साड़ी जड़ित जरी।
स्वर्ण सूत्र ते रचित अनुपम, सलमा सितार के फूल भरी॥
युगल छोर छबि रास सुभगतम, झूलत मणिन लरी।
अगणित सूर्य चन्द्र जहँ भटकैं, चमकनि अमित अरी॥
सुख प्रद झीनी हरुई कोमल, सिय तन योग हरी।
पहिरि ताहि प्यारी छबि छाजति, शोभा सकल वरी॥
जेहि पिय परसि निरखि हिय हर्षत, तेहि सम और न री।
हर्षण हेरि हेरि सब अलियाँ, सुख के सिन्धु परी॥

(११२८)

सखि पिय प्यारी के मृदु बोल।
निकसत मनहु अमिय रस घोल॥
बोलत बैन प्रसून झरै जनु, सुनि-सुनि श्रवण किलोल।
कान उठाय सुनत पशु पक्षिहु, सुख अनुभवहिं अलोल॥
सुर नर मुनि आनन्द कहैं का, मन वाणी नहिं तोल।
हर्षण पिय प्यारिउ सुनि हर्षत, इक-इक वचन अमोल॥

(११२९)

दुइ के इक-इक के दुइ गात।
पिय पै प्रिया प्रिया पै प्यारे, वारि स्वकहिं बलि जात॥
ये इनको वे उनको लखि लखि, आनँद सिन्धु समात।
परसि परस्पर प्रेम में पागत, सिगरो भान भुलात॥

रहि न सकत क्षण एक-एक बिनु, रस रूपी रस रात।
रूप-शील-गुण-केलि कला महँ, दूनहु दिव्य दिखात॥
इन सम येइ अहै दिव दम्पति, लोक न वेद जनात।
पै कछु कहौं अली मति अपने, जस कछु मोहिं बुझात॥
लाल लली ते लघु हीं लागत, हर्ष जो तौल विभात।

(११३०)

पिय की लोनाई प्रिया मन भाई रे।
प्यारी सुधराई पिया चित चाई रे॥
निरखि-निरखि छबि एक-एक की, कोउ नहिं पलक लगाई री।
धर्ममान छन छनहिं माधुरी, पियत परशि दृग लाई री॥
रहत अतृप्त जियहिं ललचाने, कबहुँक नाहिं अघाई री।
हर्षण चन्द्र चकोर परस्पर, बनिके अलिन लोभाई री॥

(११३१)

युगल छबि मोहति मनहिं अली।
नख शिख यथा सुभग नृप नन्दन, तथा विदेह लली॥
मधुर-मधुर हिय हरण सलोने, चित्त के चोर भली।
आनँद कन्द अमिय की मूरति, रस प्रद रसन थली॥
हर्षण हेरि बिक्यो बिन दामहि, चाहत चरण तली।

(११३२)

परम प्यारे लागै सिया अरु श्याम।
प्राण-प्राण अरु जीवन जीके, सुख के सुख श्री राम॥

निरखत नयन छनहु नहिं बिसरों, सुमिरि-सुमिरि गुण ग्राम।
नाम रूप तिन लीला धामहिं, रमत मनहि विश्राम॥
छन विस्मरण परम व्याकुलता, आवति दुख की धाम।
दरश-परश-सेवा सखि पाई, रहहुँ सुखी अठयाम॥
तिनके हेतुहिं चेष्टा मोरी, अह मम त्यागि तमाम।
हर्षण हेरि-हेरि हिय हर्षत, बिके रहत बिन दाम॥

(११३३)

आली मैं तो पिय प्यारी निधि पाई।
सुन्दर श्यामल गौर सलोनी, मन मोहनि सुख दाई॥
नख शिख वसन विभूषण भूषित, लीन्हीं चित्त चोराई।
मधुर-मधुर हिय हरण हमारी, सर्वस दै अपनाई॥
नृपति किशोर किशोरि कमल ते, मम मन मधुप न जाई।
नयन द्वार पीवत मकरन्दहिं, पुनि गुँजरि मेड़राई॥
जोगवति रहहुँ ताहि सखि छन छन, जिय की जरनि जुड़ाई।
आनँद अंबुधि बूड़ि हर्षण, पै तेहि थाह न लाई॥

(११३४)

जय जय प्रीतम जयति पियारी।
जय जय दशरथ नन्दन हमरे, जय जय जनक दुलारी॥
जय मन मोहन सुख के सिन्धू, जय जय कलि मल हारी।
मधुर मधुर जय जय मृदु मूरति, सुख सुषमा श्रृँगारी॥
कोटि काम मद मर्दन जय जय, मिथिला अवध बिहारी।

जय जय परिकर–प्रेम प्रहर्षित, श्यामा श्याम सुखारी॥
नयन विषय चित चोर जयति जय, रसिक राय रस वारी।
शक्ति सहित विधि हरि हर वन्दित, जय हर्षण प्रभु पारी॥

(११३५)

कैसे सखि ये नयननवा हमारे।
हेरत पिय प्यारी कबहुँ नहिं हारे॥
नख ते शिख शिख ते नख आवै, चरण कमल ते टरत न टारे।
मुख सरोज मकरन्द मधुप बनि, पियत अघात न प्रेम पियारे॥
जहाँ जाँय तहँ रहै लोभाई, अँग अँग मधु वर्षावन वारे।
कोटि मदन मूरति न्यौछावरि, रति समेत सकुचत मन मारे॥
शोभा सिन्धु बढ़त बहु छन–छन, नव नव सुख सुषुमा श्रृँगारे।
पीतउ प्यास विवर्धति मन महँ, जानत रसिक रहत मतवारे॥
हर्षण कहौं काहि ते आली, बिन देखे चित चैन न धारे।

(११३६)

निरखहुरी झाँकी लोचन लाभ को जान।
जनक लली अरु अवध लाल की, सुन्दर सुख की खान॥
भुजनि परस्पर अंश दिये हैं, अरुझि अलक अलकान।
चितय रहे इक एकहि रस ते, चित्त चोर मुसुकान॥
साटि कपोल पिया अरु प्यारी, परसत चिबुकहिं पानि।
प्रेम पगे सोहत सिंहासन, सुठि श्रृँगार सोहान॥

छबि सागर गुण आगर दोऊ, रसहि रहैं अरुझान।
हर्षण अस अभिलाष सतत सखि, लखि लखि रहौं भुलान॥

(११३७)

झलमल झाँकी अजब बनी।
शोभा सदनि नेह नव वर्षणि, वरणि सकै नहिं सहस फनी॥
नख शिख किये श्रृँगार सलोनी, वसन विभूषण कनक मणी।
मधुर मधुर मुसकति मन मोहति, विधुकर निकर विनिन्दि घनी॥
कोटि कोटि शशि सार खींचि जनु, मदन रच्यो कर सुधा सनी।
अमृत स्रवति अहर्निशि सुख मय, पीवत परिकर प्रेम पनी॥
आनँद अंबुधि मगन न निकसत, नयन वन्त जो जीव जनी।
हर्षण हृदय हरणि चित चोरनि, रसिकन की रस मूर्ति गनी॥

(११३८)

पिय ते प्यारी प्रेम लगाई।
तैसहिं प्रीतम प्रिया ते पागे, इक एकहिं सुख दाई॥
चन्द्र चकोर परस्पर बनि के, निरखत नाहिं अघाई।
बैठे रत्न सिंहासन राजत, शोभा वरणि न जाई॥
अँग अँग भूषण भव्य विभूषित, वसन वदन छबि छाई।
छत्र चमर लै सखि गण सोहहिं, सेवहिं भान भुलाई॥
स्वयं हर्षि हर्षावहिं दोउ कहँ, आनँद सिन्धु समाई।
हर्षण नृत्य गान ते प्रमुदित, रिझवहिं सिय रघुराई॥

(११३९)

राजत रत्न सिंहासन दोऊ रघुवर-राज किशोरी।
निरखि रहे इक एक मुखन कहँ, रसिक राय रस बोरी॥
दै भुज फन्द अलिङ्गन चुम्बन, करत केलि सुख साने।
पी पी अधर सुधा सब भूले, मधुर मधुर मस्ताने॥
युगल माधुरी मधुर महोदधि, लहरत लोलत कूले।
अलिगन पियहिं दृगन के द्रोणन, रोम रोम सब फूले॥
निज सुख सुखी देखि दोउ सखियन, सुखी होहिं सुखधामा।
पूर्ण चन्द्र लखि बढ़त सिन्धु जिमि, हर्षण तिमि सिय रामा॥

(११४०)

पिय-प्यारी परिकरन निहार।
सुखी होहिं लखि वदन प्रफुल्लित, सुख सागर सब वार॥
फेरि कृपा की कोर परश करि, मानत मोद अपार।
रसिकेश्वर रस वर्धन प्यारे, रसिकन रस दातार॥
रस की धारा धवल बहाई, देत सबहिं सुख सार।
स्वयं बूड़ि बोरत सब काहुहिं, मैं तैं तहँ न विचार॥
प्रेमी प्रेम और प्रेमास्पद, त्रिपुटी होत खुआर।
हर्षण रस ही रस रहि जावत, सहजानँद एक कार॥

(११४१)

परिकर पै दोउ प्रेम किये, बिसर न क्षणमपि राखि हिये।
कृपा सिन्धु करुणा कर कोमल, कृपा वरषि जन पुष्ट किये॥

कृपा विलोकनि शोच विमोचनि, चितवनि चित्तहि चोर लिये।
आपु समान साज सब साजेउ, सुख हित तिनके सजग जिये॥
दै स्पर्श एकान्तिक सेवा, मधुरी मुसकनि मोह लिये।
अधर सुधा को दै पिय भोजन, सुख समुद्र कह सौंप दिये॥
आनँद अंबुधि वितर अनँदहिं, रसिया सब कहँ रसहिं किये।
हर्षण यदपि स्वयं सो रस मय, तदपि चखत रस प्रेम पिये॥

(११४२)

राम सिया बसि प्रेम के खेरे।
नेह के भूखे बने परस्पर, जी इक एक के हेरे॥
इक इक के प्रभु अरु अनुगामी, जिमि जग स्वामि औ चेरे।
इक इक के सुख को सुख समझे, चाहहि चाह गने रे॥
दम्पति धर्म आचरण नीको, रस वर्धन श्रुति टेरे।
रसहिं रसे रस मय-रस दायक, नित्य एक रस ए रे॥
सुख वितरन हित नइ नइ लीला, करत युगल हिय प्रेरे।
इक इक हर्षण हर्षि प्रशंसहि, रूप शील गुण घेरे॥

(११४३)

प्रिया तोरी बाँकी बनी द्युति गोरी।
आत्माह्लादिनि सुख प्रद सीते, प्राण संजीवनि मोरी॥
जिय बिनु देह वारि बिनु सरिता, तोहि बिनु तिमि सब खोरी।
तुम बिनु जीवन-रस नहि देखियत, जेहि जग नेह कियो री॥

तेहि ते सबकी सुख संभूता, तुम बिनु पात न लोरी।
तिहरे प्राण ते प्राणित प्यारी, मन ते मन वारो री॥
तिहरेहिं प्रेम सिन्धु-सीकर ते, सबहिं देहुँ रस बोरी।
तव रस कोष को कण लै हर्षण, भजनिहिं देबहुँ भोरी॥

(११४४)

मै हूँ तुम्हरी दासी पिय तुम मोरे।
पाय पलोटि निरखि मुख चन्द्रहिं, पियति पियूष अहो रे॥
तुम बिन व्यर्थहिं चेष्टा मोरी, तोहि हित केवल हो रे।
द्रष्टा बनि जिमि दृष्यहिं देखियत, कहु केहि काम को ओरे॥
प्रभु प्रसन्न मुख रहैं प्रयोजन, मम स्थिति हित तोरे।
तिहरे गुण ते गुणी कहावहुँ, लै उजियार उजोरे॥
मोहिं महँ दिखै सकास ते तिहरे, प्रीति रीति-रस जो रे।
हर्षण निजी सेविका ऊपर, कीन्ही कृपा अथोरे॥

(११४५)

प्यारी मैं तो साँच सुनाऊँ, तुम सम अतिशय नहिं कोय।
रस आगरि सुख सागरि सुभगा, प्रेम मूर्ति सुख सोय॥
करि निमित्त मोहिं प्राण वल्लभे, हर्षित हिय महँ होय।
अङ्ग स्वरूप अलिन लै छन छन, रस वर्षहु रस जोय॥
मीठ मीठ माया ते अपने, सुखी करति मोहिं मोय।
तेहिं ते सदा स्वत्व रखि मो पर, मम अधिकार को खोय॥

भोगत रहहु यथेच्छा अहनिशि, रस ही रस को बोय।
हर्षण हर्ष सने रस राते, रहहिं एक रस दोय॥

(११४६)

प्रीतम पद की सेविका सहज।
बिनु सेवा मोहि कछुक न भावै, जान हृदय वर ब्रह्म जो विरज॥
तव सुख सुखी स्वभाव हमारो, चाह तिहारी चाह औ गरज।
मोहि सुखी लखि तुम सुख मानौ, सुखी रहहुँ तेहि हेतु मैं सुभुज॥
तिहरे हित श्रृँगार सजाऊँ, केलि कला दर्शाइ के सुभज।
जो तुम सुखी रहहु मम दुखते, अनुपम सुख मैं गिनहुँ नित्य निज॥
प्राणेश्वरि-हृदयेश्वरि कान्ता, कहँहि नाथ जो मोहि होइ अज।
सोउ स्वीकार करहुँ तव हेतहिं, यदपि रहहुँ सकुचाई के विलज॥
हर्षण हौं परतन्त्र पिया के, प्यार करहिं या ठुकराइ के तज।

(११४७)

जय सीते श्री कुँज विहारिणि, प्रेम दान मोहिं दीजिये।
तोहि में रमण करत रस रासत, बिन विराम सुख भीजिये॥
तेहि ते राम कहत मोहिं मुनिजन, तनिक शंक नहिं कीजिये।
मो मन बसत सदा तोहिं पाहीं, जानि प्रीति अति रीझिये॥
तिहरो अहौं अनन्य उपासी, तव रस पी पी जीजिये।
तोहि हित मिथिला बिना बोलाये, पहुँचि के गौरव छीजिये॥
तिहरो प्रेम चखन के काजहिं, चेष्टित रह गुन लीजिये।
अस विचारि हर्षण हिय हारिणि, परम प्रसन्न पसीजिये॥

## (११४८)

जय-जय प्रियतम प्राण अधारे।
कौन-रूप-गुण शील मोहिं पै, कौन क्रिया सुख सारे।।
मैं नहिं तुमहिं मोहिबे लायक, कौनहु यतन विचारे।
राउर रूप श्रवण करि प्रथमहिं, हमहिं भई बलिहारे।।
कृपा विवश चलि धनु को तोरी, वरण कियो सुकुमारे।
युग-युग जनम-जनम मैं दासी, तुमहिं बनो मोरे प्यारे।।
कनक लता जिमि तरुण तमालहिं, अलिनी कमलहिं पा रे।
चरण धूलि सम चरणहिं लिपटी, जाउँ नहीं दुतकारे।।
दोउ कुल में मोहिं कौन है अपना, हर्षण शरण तिहारे।

## (११४९)

चंपक वरणि चारु मृग लोचनि, भव मोचनि मिथिलेश किशोरी।
चारुस्मिते चारु दति चन्दन, चर्चित चन्द्र वदनि चित चोरी।।
तिहरो लहेउ पतित्व भाग वश, लोक वेद भइ कीर्ति अथोरी।
जानहिं क्षत्री धर्म कटुक हम, प्रीति रीति को ज्ञान न गोरी।।
रस की रस तुम प्राण पियारी, वितरु प्रेम मोहिं कृपा की कोरी।
सीता पति की लाज तुमहिं को, रस वर्धनि रस आगरि मोरी।।
निरखत नित नव आनन चन्द्रहिं, रह अतृप्त मम चक्षु चकोरी।
हर्षण हर्षि हमहि हर्षावहु, रति रसज्ञ करुणा रस बोरी।।

(११५०)

सुन्दर श्याम मदन मद मोचन, कमल नयन अवधेश कुमार।
पुंसा मोहन रूप मधुर मधु, वर्धमान छन छनहिं तुम्हार॥
तव मुख पेखत चन्द्र बापुरो, गयो गगन गुनि आपनि हार।
राम रसोदधि वेदहु वर्णत, रसिक शिरोमणि रस दातार॥
नाथ कृपा करि भरि मोहिं महँ रस, रहहिं चखत निज रुचि अनुसार।
कुल वैरागी जन्म पाय के, जानहुँ कहा रसहिं संचार॥
मोरे सर्वस स्वामि सुहावन, मैं पद पंकज भ्रमरी नार।
हर्षण परम प्रसन्न पिया लखि, रहहु सुखी निज सुखहिं बिसार॥

(११५१)

प्रिया वाटिका पगनि धरी री।
श्रवण रन्ध्र महँ मधुरी मधुरी, किंकिणि सुधुनि परी री॥
भूलि गयो मैं सब विधि आपा, हिय सर रसहिं भरी री।
निमि कुल चन्द्र निरखि निज नयनन, बन्यो चकोर अरी री॥
लोक-बन्धु की लाज हेरानि, गुरु सेवन बिसरी री।
नित्य तृप्त निष्कामी मन में, मधुर अतृप्ति भरी री॥
मोहन मंत्र प्रेम ते फूँकी, मनमथ मधुर झरी री।
महा महिम्ना अनुप अनन्ती, शक्ति अचिन्त्य वरी री॥
गावत गुण गण पार न पावौं, हौ तुम रस अगरी री।
बिक्यो प्रिया इक चितवनि तेरे, आनँद सिन्धु चरी री॥

प्राण वल्लभे प्राण तू मोरी, तुम बिन सब बिगरी री।
हर्षण सी कहि के सुख सानू, ता कहि सुधिहु हरी री॥

(११५२)

लाज लगै सुनि बतिया तोरी।
मैं अरु मोर स्वयं सब तिहरो, वाणी असत न मोरी॥
निज धन देन चहौं जो तुमको, सो तो तुमहिं अहो री।
औरन के तो अहैं अनेकन, हो एक तुम मम ओरी॥
देहेन्द्रिय मन बुद्धि आत्मा, तुमहिं पाय सब छोरी।
भोग-मोक्ष को रोग रहेव नहिं, पिय के प्रेम में बोरी॥
तव सुख हेतु करत कैंकर्यहिं, निशि दिन रहौं विभोरी।
हर्षण और आस नहिं अन्यत, लखत रहौं दृग कोरी॥

(११५३)

मैं अपनी मन भावनि पायो।
रत्न अमोलक प्राण पियारी, मन दै तोहि अपनायो॥
श्वास-श्वास कर सुमिरण मधुमय, पल छिन नाहिं भुलायो।
पुलकित वदन करौं आलिङ्गन, लोचन लखौ लोभायो॥
श्रवण सुनत तव मधुरे बोलन, घ्राण गंध अँग जायो।
अधर सुधा रस पी पी रसना, और सबै बिसरायो॥
अँग-अँग को स्पर्श तिहारो, मो अँग-अँग पुलकायो।
नित नव प्रेम प्रवर्धनि सीते, हर्षण हिय हर्षायो॥

(११५४)

प्राणों के प्रिया मधुर-मधुर मृदु बोले।
मेरो तन-मन-धन-जन-जीवन, सुख के सुख सँग डोलै॥
धर्म-कर्म अरु चाह-पूर्ति तुम, हो आराध्य अलोलैं।
तुमहिं लक्ष-संकल्प हृदय के, करणहिं करन किलोलैं॥
इन्द्रिय-रस भोगहु तव हेतहिं, नहिं स्वतन्त्र मन दोलै।
भोक्ता-भोग्य सबै तुम प्यारे, इक ते दुइ बनि चोलै॥
मम मन बनि प्रियतम संयोगहिं, सहहु वियोग अतोलै।
हर्षण हृदय रमण निशिवासर, रसत रहैं रस घोलैं॥

(११५५)

प्रिया मोरी जीवन प्राण अधार।
तुम बिनु मोहिं आस नहि अन्यत, तीनहुँ लोक मझार॥
तुम बिनु भोक्ता नहि कोउ केरो, भोग्य न कोउ हमार।
राउर बिनु मोहिं कुछ नहि सूझत, अनुभव गम्य अपार॥
गुनि अनुगामी प्राण वल्लभे, दीजो नाहीं विसार।
तन मन धन अरु आत्म हमारो, तिहरो सब सुख सार॥
कृपा कोर को निरखन वारो, प्रेमहिं प्रेम पुकार।
हर्षण रस सागरि रस कण ते, जीवहुँ नयन निहार॥

(११५६)

प्रियतम प्रेम पसारी जी, मोहिं प्यारेउ कृपा निधान।
मेरी सब चेष्टा में देखत, प्यारे प्रेम प्रमान॥

लाज लगे लखि अपने ओरी, सेवा सुखद न जान।
देखे दोष न मोरे कबहूँ, थाके नहिं गुण गान॥
सर्वस वार दियो मोहिं अपनो, तबहुँ न देत अघान।
लेत लेत हौं हूँ नहि थाकी, सकुच न हिय महँ आन॥
सीता रमण नाम सुनि समझौं, निज सौभाग्य महान।
हर्षण दै न सकी कछु प्रभु कहँ, वारी आत्म अमान॥

(११५७)

प्रेम प्रवर्धनि तुमहीं प्यारी, हो हिय अहलादिनि गोरी।
तुमहिं अहौ चेतनता तन की, तुमहीं मन रंजनि मोरी॥
तिहरे जीवन ते मम जीवन, तिहरे प्राण ते प्राणित प्राण।
सत्य सत्य तुम आत्मा मोरी, तव आत्मा मैं बात प्रमाण॥
देहेन्द्रिय मन बुद्धि अहं सब, शब्द-रूप-रस गंध औ पर्श।
मम सुख हेतु तुमहि सब सीते, देत रहति क्षण क्षण नव हर्ष॥
तुमहीं हो मैं, मैं ही हो तुम, अविनाभाव विलक्षण रूप।
इक इक बिनु अस्तित्व न हर्षण, कैसो यह अद्वैत अनूप॥

(११५८)

रस मय रघुनन्दन सुख सारी।
अकथ अनन्त अगम्य अनूपम, अमल अचल अविकारी॥
सब समर्थ जो घटै अनघटै, वा अन्यथा क्रियारी।
तुमहिं अपेक्षा मोर न कबहूँ, महिमा बड़ी तिहारी॥

सुठि सौंदर्य महा माधुर्यहु, सौकुमार्य अति भारी।
सौष्ठव लावण लालित्वऽनुपम, मोहकत्व वशकारी॥
सुठि सौगन्ध कलित कोमलता, तिहरे देह मझारी।
प्रभुता तजि मम प्यार करत प्रभु, कर जोरत सब वारी॥
रसते भरे वचन वर बोलत, धनि साकेत विहारी।
अंग अंग रस देत नित्य नित, सुख सुषुमा श्रृँगारी॥
मानद मान देत निज नीचहिं, वेदहु विरद उचारी।
विरह सहत नहिं मेरो नेकहु, रहैं आँख अँसुआरी॥
देखि दृगन मोहि पिय सुख सानत, करूणा कृपा अगारी।
निज गृह स्वामिनि मुखते भाखत, बड़पन सबै बिसारी॥
हृदय हार मोहिं प्रियतम करिके, सुख सागर सुख पारी।
हर्षण इहै बड़प्पन तिहरो, लहे कीर्ति उजियारी॥

(११५९)

जनक लाड़िली प्राण वल्लभे,
तुम सम–अधिक न त्रिभुवन आन।
सौकुमार्य सौंदर्य मधुर पन, सुख सुषमा श्रृँगार महान॥
मोहिं महँ दिखै सो तिहरो प्यारी, मम हित कीनी तुमहि विधान।
सुख सागरि की लहर झूलने, झूलूँ आनँद अति अनुमान॥
बाह्य रूप में हमहिं दिखावै, कर्ता–भोक्ता–अरु गुण खान।
वास्तव में यह सब तुमहीं हो, मैं कछु नहीं यदपि भगवान॥

मम सकास ते छन छन तुमहिं, सरसति रहहिं सदा मोहिं जान।
रावरि सुख के हेतु स्वत्व मम, तिहरी लीला संग सुहान।।
हौं अधीन जस नाच नचाओ, नाचूं लखि तव भौंह भुलान।
सहज धर्म यह सहजी सेवा, सहजहिं होवै मोहिं ते मान।।
एक छत्र स्वामिनि तुम सबकी, तुम तजि मोकहँ गती न आन।
अस विचार हर्षण सुख साने, करत रहत तिहरो गुण गान।।

(११६०)

प्राण नाथ मोहि अति प्रिय लागौ, गति अनन्य तिहरे रस रागौं।
और कछू नहिं मोहि-महँ स्वामी, सहज सेविका सेवन पागौं।।
जो कछु अहौं तिहारी रघुवर, तुम ते पृथक न सत्ता मोर।
मन में तन में रोम रोम में, व्याप रहे तुम हीं सब और।।
सूत्रकार-यन्त्री ते पृथकहिं, कठपुतली अरु यंत्र को नाम।
पै तव रुख नचतेउ मम तोहि ते, नहिं अस्तित्व अलग लखु राम।।
सच पूछहु तो मम नाचहु में, नाचहु तुमहिं नाथ अविरामा।
मम मुख बोल रहे प्रभु तुमहीं, रमे रहत मोहिं माहिं अकामा।।
तव कर क्रीड़न वस्तु अहौं प्रभु, क्रीड़हु अपने रुचि अनुसार।
ननु नच किये बिना हिय हर्षण, सहजहिं दासी नित्य तिहार।।
खेलत रहहु खेलौना अपनो, पिय खेलवारी लसत ललामा।
आनँद सिन्धु अपुन में अपनहिं, अपनेहिं ते रम सदा स्वधामा।

(११६१)

पिय को प्यारी प्रिया को प्यारो, देखत दृग नहिं नेक अघावै री।
ये उन पै वे इन पै बलि बलि, उर भुज कण्ठ कपोल मिलावैं री॥
पीतउ प्रेम पियूष प्रेम पगि, बढ़त तृषा नहिं तृप्ति को पावैंरी।
स्वामि स्वामिनी कहें परस्पर, प्रीति रीति रस रश्मि बढ़ावैं री॥
केलि कला में दक्ष लाल ललि, रति-रस-सिन्धु सनन्दि समावै री।
रूप रासि सुख पुञ्ज रसिक दोउ, एक एकन के गुण गण गावैं री॥
कहत-सुनत-पर्शतदृग देखत, युगलकिशोर रसहिं रस छावैरी।
हर्षण मन-बुधि-वाक अतीतहिं, कौन वरणि के पारहिं जावै री॥

(११६२)

प्यारी रे तोरे नैना बाण लगे।
पुष्प वाटिका जनक पुरी बिच, बींधे मोहिं मगे॥
तब ते घायल घाव न पूरत, नितनव जियहिं जगे।
शान्ति मिलति तेहिं शर के सीधे, अति आश्चर्य पगे॥
हर्षण विवश भयो तव दृग के, तेहि रंग रहत रंगे।

(११६३)

प्यारी तोरी तिरछी तकनि अहो री।
अमृत भरी जुड़ावनि जी की, जानहु सर्वस मोरी॥
कमल नयनि मृग सावक लोचनि, मीनाक्षी रस बोरी।
श्रवणन लौं बड़ि बड़री अँखियाँ, कजरी कजरी तोरी॥

शील सँकोच कृपा की आगरि, प्रेम भरी भल कोरी।
निरखत रहौं तासु बनि सेवक, यह अभिलाष अथोरी।।
पियत पियूष अघाऊँ न नेकहु, बीतैं कल्प करोरी।
हर्षण हमरे हिय की हारिणि, मन मोहनि चित चोरी।।

(११६४)

कजरारी हैं तोरी आँख प्रिया।
श्वेत श्याम रतनारी मानहु, सरसुति जमुना गंग त्रिया।।
अमिय हलाहल मदते पूरी, जियत-मरत मतवार किया।
प्रेम-पगी रस-बस दरशाती, रस वर्धनि रस बोर दिया।।
सुन्दर कमल कली के मधु को, पी पी मम मन मधुप जिया।
गति मति मोर लोभानी तेहि पै, बिना दिये सरवस्व लिया।।
निज नयनन के अतिथ बनायो, पूज प्रेम को वारि दिया।
निरखत रहौं नित्य निशि वासर, जेहिं ते हर्षण हर्ष हिया।।

(११६५)

प्यारी रे छबि तोरे नयन की।
मन में बसी टरे नहिं टारे, काह कहौं मैं वा चितवन की।।
नीलनलिन समसुन्दर श्यामा, धनि बिन काजर कजरे पन की।
अरुणारी अरुणार्विन्द सी, श्वेत कमल सम श्वेत सुमन की।।
पलक किवाड़ वरौनी पहरुआ, रक्षित सदा सनेह स्वधन की।
लोचन लोलुप भये हमारे, लखतउ ललकत लागत सनकी।।

सुधा सिन्धु से भरे लबालब, मधुर मधुर लहरन उछरन की।
हर्षण हिय हुलसत अरु पुलकत, वर्धमान छबि लखि छन छन की॥

(११६६)

आँख तोरि काजल बिनु काली।
ताहू पै पिय अंजन आँजी, कीन्ह न काह बेहाली॥
श्याम पूतरी निकट चतुर्दिक, सहज श्वेत अरु लाली।
बड़री बड़री कान लौं बगरी, तेहिं पै चंचल चाली॥
भरी मदन मद रसहिं रसी नित, चित्त चोरावनि वाली।
जेहिं चितवहिं तेहिं वश करि राखहिं, मोहन मन्त्र को डाली॥
देखि बाग बिच बिना विवाहहिं, मोहीं मैं बनमाली।
मम नयनहिं नय के तव नयना, प्रेम पींजरे पाली॥
हर्षण सोऊ विरह अकामय, सत्य सत्य सुख शाली।

(११६७)

वर्षें अमृत अँखियाँ पिया तोरी।
पी पी परिकर प्रेम दिवाने, मस्त बने मधुर मखियाँ॥
मधुर मिठास वाक नहिं आवै, अनुभव कर सब सखियाँ।
शील संकोच निबाहन वारी, प्रेम पगी रस चखिया॥
दृष्टि मात्र चित्तहिं अपहरती, करै यत्न कोउ लखिया।
सुर-नर-नाग ऋषी मुनि जेते, जड़-चेतन हैं सखिया॥
मोरी प्राण संजीवन मूरी, निश दिन नयनन रखिया।
हर्षण कृपा-कोर निस्तारिहिं, हमरे और न पखिया॥